

जून 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 10

अक्रम विज्ञान से अब आपको प्रतीति तो रहेगी,
लेकिन फिर जितनी जागृति रहेगी,
उतना लक्ष में रहेगा।
जैसे-जैसे जागृति उत्पन्न होगी,
उसके बाद पूरी बात समझनी पड़ेगी।
अभी तो जैसे-जैसे प्रगति करते जाओगे,
वैसे-वैसे अनुभव बढ़ता जाएगा।
परिचय में रहकर ज्ञान पूरा
समझ लेना है।



प्रतीति

लक्ष

अनुभव

(आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद)

वर्ष : 14 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 164
जून 2019
Total 32 pages

दादावाणी

‘ज्ञान’ के बाद पुरुषार्थ के लिए अभ्यास

Editor : Dimple Mehta

© 2019

Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक

भारत : 150 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

संपादकीय

अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादाश्री की कृपा से हमें आत्मज्ञान प्राप्त हुआ और ज्ञान मिलते ही सौ प्रतिशत प्रतीति बैठ जाती है कि ‘मैं आत्मा हूँ’, पंद्रह प्रतिशत जागृति और दो प्रतिशत अनुभव हो जाता है। वास्तव में खुद आत्मा है, पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशमान करने की क्षमता रखता है, ‘खुद’ अनंत शक्तियों का मालिक है, उसके बावजूद भी खुद को इतना लाचार, दुःखी और निस्सहाय अनुभव करता है, यह कैसा आश्चर्य है! इसका क्या कारण है? खुद के स्वरूप, खुद की शक्ति, खुद की सत्ता का खुद को भान ही नहीं है। अब, संपूर्ण रूप से आत्मानुभव प्राप्त करने के लिए अभी और आगे के अभ्यास की जरूरत है।

यह संसार, अज्ञान के अभ्यास का परिणाम है। अब, पूज्य दादाश्री द्वारा दी गई पाँच आज्ञा के अभ्यास से संसार से छूट सकेंगे। फिर भी प्रकृति अपना रोल निभाए बगैर रहेगी नहीं, वह छोड़ेगी नहीं। अब, हमें पुरुष पद में रहकर, आज्ञा रूपी पुरुषार्थ करना है। पाँच आज्ञा का जितना पालन होगा उतनी ही जागृति उत्पन्न होगी, जागृति ही पुरुषार्थ है। अब, दादाश्री ने इस ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए आज्ञा के अभ्यास पर जोर दिया है। अभ्यास को दूसरे शब्दों में कहें तो हैन्डल मारना, प्रैक्टिस करना।

इस जन्म में, ऐसा ज्ञान मिलने के बाद जिससे कि एक अवतारी पद की प्राप्ति हो सकती है, अब इस जन्म में आत्मानुभव से लेकर स्पष्ट वेदन प्राप्ति तक की क्षपक श्रेणियाँ चढ़ने की शुरुआत करनी है। संसार की, बाकी की सभी जिम्मेदारियाँ पूरी करते-करते यानी कि निश्चय में रहकर, शेष व्यवहार को पूरा करते-करते इस लक्ष को प्राप्त करना है। पूज्य दादाश्री ने जगह-जगह पर अपनी वाणी में महात्माओं के व्यवहार की उलझनें, आज्ञा में रहने में आने वाली मुश्किलें और जागृति में कैसे रहा जाए, इन सभी के खुलासे किए हैं।

प्रस्तुत अंक में ‘अभ्यास’ शब्द का विश्लेषण किया गया है जिसमें यह समझाया गया है कि अभ्यास किसे कहते हैं, अभ्यास किसका करना है, कैसे करना है, अनादि के अभ्यास को कैसे बदलें, अभ्यास व अध्यास की परिभाषा क्या है। सत्संग, वाचन व पद का अभ्यास, निदिध्यासन, अभ्यास के विविध तरीके, अभ्यास से तप में होने वाले आनंद के बारे में भी बताया गया है। यह भी बताया गया है कि क्या अभ्यास ही पुरुषार्थ है, क्या अभ्यास ही जागृति है एवं खुद के स्वरूप का अनुभव करने के लिए प्रैक्टिकली आज्ञापालन का अभ्यास कैसे करें। अब, सभी महात्मा इसे समझकर, इसका अभ्यास करें व रोजमर्रा के जीवन व्यवहार में पाँच आज्ञा का उपयोग करके, स्व-पद के अनुभव में आने तक की श्रेणियों में आगे बढ़ें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

‘ज्ञान’ के बाद पुरुषार्थ के लिए अभ्यास

जागृति के लिए ज़रूरी है आज्ञा का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : जब-जब हम अपने व्यवहार और वर्तन में आते हैं तब, ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ या ‘चंदूभाई हूँ’ उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

दादाश्री : यह समझ लेने की ज़रूरत है। ‘आप’ चंदूभाई भी हो और ‘आप’ ‘शुद्धात्मा’ भी हो! ‘बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट’ से आप ‘चंदूभाई’ और ‘बाइ रियल व्यू पोइन्ट’ से आप ‘शुद्धात्मा’ हो! ‘रिलेटिव’ सारा ही विनाशी है। विनाशी भाग में आप चंदूभाई हो! विनाशी व्यवहार सारा चंदूभाई का है और अविनाशी आपका है! अब ‘ज्ञान’ के बाद अविनाशी में आपकी जागृति रहती है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान की सतत् जागृति के लिए अन्य किसी अभ्यास की ज़रूरत है क्या?

दादाश्री : स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद आपको क्या करना है? आपको अब उपयोग रखना है। अभी तक आत्मा का ‘डायरेक्ट’ शुद्ध उपयोग था ही नहीं। प्रकृति जैसे नचाती थी, वैसे आप नाचते थे और फिर कहते हो कि ‘मैं नाचा! मैंने यह दान किया, मैंने ऐसा किया, वैसा किया, इतनी सेवा की!’ अब आपको आत्मा प्राप्त हो गया है इसलिए आपको उपयोग में रहना है। अब आप पुरुष बने हैं और आपकी प्रकृति जुदा हो गई है। प्रकृति अपना काम किए बिना रहेगी नहीं, वह

छोड़ेगी नहीं। और आपको, पुरुष को, पुरुषार्थ में रहना है यानी कि पुरुष को पुरुषार्थ करना है।

प्रश्नकर्ता : पुरुष को क्या पुरुषार्थ करना है?

दादाश्री : आज्ञारूपी। दूसरा कौन सा? आपको आज्ञारूपी और मुझे आज्ञा रहित। वही की वही चीज़, मुझसे आज्ञा के बगैर हो पाती है और आपसे आज्ञा द्वारा होती है। अंत में फिर धीरे-धीरे आज्ञाएँ चली जाएँगी और उसकी मूल सहज निरालंब दशा रह जाएगी जैसे-जैसे प्रैक्टिस होती जाएगी वैसे-वैसे!

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि सारी चाबियाँ आपके पास हैं। हमारा निश्चय है कि आज्ञा में रहना है तो हमारी जो अजागृति है वह इतनी लंबी क्यों चलती है?

दादाश्री : जागृति तो लानी ही चाहिए न! जागृति तो बढ़ानी चाहिए न आपको! वही पुरुषार्थ है न! जागृति ही पुरुषार्थ है। अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। पाँच आज्ञा का जितना पालन होगा, उतनी ही जागृति उत्पन्न होगी। वर्ना, जागृति कैसे उत्पन्न होगी? आज्ञा का पालन नहीं करते हो इसलिए जागृति कम है! आज्ञापालन का थोड़ा अभ्यास ही करने की ज़रूरत है।

अभ्यास व अध्यास की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : दादा, अभ्यास क्या है?

दादाश्री : अभ्यास अर्थात् डॉक्टर ने आपसे कहा हो कि आप दाहिने हाथ से मत खाना फिर भी वापस दाहिना हाथ घुस जाता है इसलिए क्या कहते हैं कि उसका 'अभ्यास करोगे' तो फिर वह नहीं आएगा। क्या कहते हैं? अभ्यास करो। क्योंकि, अनादि का अन्-अभ्यास है। तो अभ्यास करने से सब ठीक हो जाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : अध्यास और अभ्यास के बारे में ज़रा समझाइए।

दादाश्री : 'मैं चंदूभाई हूँ', वह देहाध्यास है, 'मैं पटेल हूँ', वह देहाध्यास है, 'मैं काला हूँ', 'मैं गोरा हूँ', वे सभी देहाध्यास हैं।

पूरा जगत् देहाध्यास से मुक्त नहीं हो सकता और खुद के स्वरूप में नहीं रह सकता। आप स्वरूप में रहे यानी अहंकार गया, ममता गई। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा लक्ष (जागृति) बैठा, तब से किसी तरह का अध्यास नहीं रहा। अब वैसा कुछ नहीं रहा है फिर भी यदि भूलचूक हो जाए न, तो कुछ घुटन महसूस हो सकती है।

अब, देहाध्यास में से छूटने का अभ्यास करो, वह अभ्यास करोगे तब आत्मा प्राप्त होगा।

अभ्यास, किसका करना है?

प्रश्नकर्ता : गीता में श्लोक है जिसमें कृष्ण भगवान अर्जुन से कहते हैं कि, 'जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ेगा, वैसे-वैसे तू मेरे सच्चिदानंद स्वरूप को प्राप्त कर सकेगा।' वह समझाइए।

दादाश्री : अभ्यास किसका करना है? तब कहें, अध्यास छोड़ने का। देहाध्यास को छोड़ने का अभ्यास करना है और स्व-स्वरूप को प्राप्त करने का अभ्यास करना है। ये दो अभ्यास करने हैं। अब, कृष्ण भगवान ने जिस अभ्यास के बारे

में बताया, उसे लोग अपनी-अपनी भाषा में ले गए। हायर स्टैंडर्ड का, लोअर स्टैंडर्ड का या कॉलेज का अभ्यास करने से सच्चिदानंद स्वरूप नहीं बन सकते।

भगवान ने गीता में कहा है कि, 'अभ्यास करना।' तो अभी गीता का इतना अधिक अभ्यास किया कि अभ्यास ही अध्यास हो गया। अध्यास छोड़ने के लिए भगवान ने अभ्यास करने को कहा, तो अभ्यास का ही अध्यास हो गया!

अभ्यास, है अंदर का पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : क्या अभ्यास ही पुरुषार्थ है?

दादाश्री : लोग जो अभ्यास करते हैं न, उसे तो वे अपनी स्थूल भाषा में ले आए हैं, उस अभ्यास को। अभ्यास तो एक प्रकार का अंदर का पुरुषार्थ है। क्या है?

प्रश्नकर्ता : पुरुषार्थ!

दादाश्री : हाँ, वह अभ्यास सब से बड़ा पुरुषार्थ कहा जाएगा यदि पुरुषार्थ नहीं हुआ तो वह अभ्यास अध्यास के रूप में परिणामित होगा।

अब, पहले के अभ्यास के कारण चंदूभाई ने किसी को गाली दी तो उस समय आपके पास जो यह ज्ञान है, आपने जो कुछ भी पढ़ा है अभी तक, अंदर वह ज्ञान आपसे क्या कहेगा? 'अरेरे.. यह गाली क्यों दे दी?' तब फिर आपको जो पछतावा होगा, वह अभ्यास है। गाली चंदूभाई दें और आप पछतावा करो, वह अभ्यास है। यदि ऐसा अभ्यास हो तो उसे पुरुषार्थ कहा जाएगा।

ग्रहण करना ही शुद्धात्मा का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : क्या इस अभ्यास के बारे में सोचते रहने से जागृति आएगी?

दादाश्री : सोच-विचार करते रहने से जागृति नहीं आएगी। सोचना तो है ही नहीं, सोचना तो जोखिम है। चंदूभाई जो सोचें, वह आपको देखते रहना है। वे क्या सोच रहे हैं और क्या नहीं!

ग्रहण करने से ही जागृति आती है। विचारों में तो चीज़ परोक्ष रहती है। जबकि ग्रहण करने में चीज़ प्रत्यक्ष हो जाती है। सुनते रहने से और सोचते रहने से वस्तु की प्राप्ति नहीं होती। अतः ग्रहण करने का ही अभ्यास करना चाहिए। ग्रहण करना अर्थात् क्या कि खुद को यही अभ्यास करना है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह जागृति में रहना चाहिए व जागृति में और क्या रहना चाहिए? कि सामने वाले में भी शुद्धात्मा है। चाहे उसने ज्ञान लिया हो या नहीं। हम उसकी पैकिंग (खोखे) को समझें और उसके माल को भी समझें। नहीं समझ सकते? यानी कि (आपको) चंदूभाई को, नगीन भाई गाली दें तो आपको देखते रहना है कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं। यह भी देखते रहना है कि नगीन भाई क्या कर रहे हैं, नगीन भाई के आत्मा को शुद्ध ही मानना है। 'वे कर रहे हैं,' ऐसा नहीं कहना है। ये उदय कर्म लड़ रहे हैं। कौन लड़ रहा है? दोनों के उदय कर्म के भैसे लड़ रहे हैं। दोनों को देखने की ज़रूरत है।

अभ्यास के लिए चाहिए निरंतर जागृति

प्रश्नकर्ता : हम लोग कल जो बातें कर रहे थे, 'अभ्यासेन वैराग्येन।' यानी 'अभ्यासेन' जो बताया, वह अभ्यास निरंतर जागृति का, जागृति का अभ्यास करना है?

दादाश्री : नहीं। यदि जागृति रहेगी तो अभ्यास होगा। आपको जो भी अभ्यास करना हो, वह हो सकेगा।

हर बात में ज़रूरी है अभ्यास

प्रश्नकर्ता : यह इतना सरल नहीं है, दादा। हम तो तय करते रहते हैं लेकिन जागृति आती है और चली जाती है। आती है और चली जाती है। ज़्यादा देर तक नहीं टिकती। जब पद में उपयोग रखते हैं न, तब यों दो लाइन के बाद फिर वह कहीं और चला जाता है।

दादाश्री : क्या चला जाता है? चला जाता है लेकिन रहता तो है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रहता तो है न!

दादाश्री : जब तक उसकी प्रैक्टिस नहीं हुई, तब तक तो वैसा ही लगेगा न! वह तो ऐसा है कि जब तक आपको हजामत करने की प्रैक्टिस नहीं होगी, तब तक खून निकलता ही रहेगा इसलिए लोग शोर मचाते हैं कि 'भाई हजामत करने से खून निकलता है!' यदि ऐसा कहेंगे तो वह गलत दिखाई देगा न! क्योंकि प्रैक्टिस नहीं हुई है। चंदू से कहता हूँ वह हमेशा का है क्या? शुद्ध उपयोग नहीं रहता, वह हमेशा की चीज़ है, क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं।

दादाश्री : उसकी प्रैक्टिस हो जाने के बाद?

प्रश्नकर्ता : फिर हमेशा के लिए हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ। तो वह हजामत जैसा है।

प्रश्नकर्ता : सच है, दादा। अभी आप जिस तरफ भार देने लगे हैं हम भी उसी तरफ भार देते हैं। पहले यों ही सब गफलत में चला जाता था।

दादाश्री : अभी तो धीरे-धीरे, बहुत आगे बढ़ना है। थोड़ा-थोड़ा करके।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् हमें प्रैक्टिस कर के शुद्ध उपयोग में रहना पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ। वह सब अभ्यास से ही, फिर अपने आप ही सहज हो जाएगा। जैसे कि दाढ़ी बनाते समय नई ब्लेड कितनी सारी जगह से खून निकाल देती है। फिर धीरे-धीरे प्रैक्टिस से अनुभव हो जाने के बाद खून नहीं निकलता, सहज हो जाता है। उसी प्रकार अगर हम पैदल चलते हुए उपयोग रखें तो रिलेटिव और रियल सहज हो जाएगा।

छोटे बच्चे चलना कैसे सीखते हैं? गिरते हैं, चलते हैं फिर गाड़ी का सहारा लेकर चलते हैं ऐसा सब करते हैं लेकिन फिर ऐसा करते-करते सब ठीक हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : कोई उँगली पकड़कर चलवाता है, दादा।

दादश्री : हर चीज़ में अभ्यास की ज़रूरत है। आप दो-चार दिन से अभ्यास करने लगे हो, अब दस दिन-पंद्रह दिन करोगे तो ऑल राइट हो जाएगा।

यदि गर्ज होगी तो हो पाएगा अभ्यास

प्रश्नकर्ता : गीता जी में ऐसा लिखा है कि 'अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय।'

दादाश्री : ठीक है, अभ्यास कब हो पाएगा? यदि उसकी गर्ज होगी तो। जिसे गर्ज जगेगी, उसका अभ्यास अपने आप ही होता रहता है। गर्ज जगनी चाहिए। गर्ज होगी तो वह वैसा ही बन जाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जब शादी की गर्ज जगे तब क्या उसका अभ्यास करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह उदाहरण ठीक से

नहीं बैठता। जब शादी की गर्ज हो तो शादी तो हो जाती है लेकिन शीलवान बनने की गर्ज हो तो शीलवान नहीं बन पाते।

दादाश्री : नहीं, लेकिन कभी न कभी वह उस सिद्धि को प्राप्त किए बिना नहीं रहेगा। अंत में वह हासिल कर ही लेगा। गर्ज ही नहीं है न लोगों को, संयोग के अनुसार पलट जाता है। यदि पलटेंगे नहीं तो कुछ भी असंभव नहीं है क्योंकि शीलवान बनते-बनते तो कितने ही टेस्ट इग्जामिनेशन(कसौटी) आते हैं। तब तक इंसान पलट न जाए, ऐसा होता नहीं है न!

तन्मयाकारपने के अभ्यास से कायम है संसार

आप तो 'शुद्धात्मा' हो और 'चंदूभाई' तो *वळगण* (बला) है। लेकिन अनादि काल का यह अभ्यास है इसलिए हर बार उसी ओर खींच ले जाता है। आज आप जिस तरह बरतते हो वैसा पिछले जन्म के आधार पर बरतते हो और आपका इस जन्म का अभ्यास अलग है, इन दोनों के बीच जो घर्षण होता है, उसे संसार कहते हैं।

अनादि काल से जिस आधार पर यह संसार टिका है। उस आधार को तोड़ते रहना है। और कुछ नहीं, सिर्फ, आधार को ही तोड़ते रहना है।

अब, यह संसार किस आधार पर टिका है? तब कहें, मन के जो पर्याय हैं, मन की जो अवस्थाएँ हैं, उनमें आत्मा तन्मयाकार हो जाता है, जिसकी वजह से संसार खड़ा है। न तो बुद्धि परेशान करती है न ही कोई और परेशान करता है। अतः मन के पर्यायों को तोड़ते रहना चाहिए। ये 'मेरे नहीं हैं, मेरे नहीं हैं', इस तरह वहीं पर बैठे-बैठे उन्हें हिलाते रहना चाहिए। उन्हें तोड़ते रहने से वे अलग हो जाएँगे। अनादि का जो अभ्यास है न, वह अलग नहीं होने देता। उसमें

उसे मिठास लगती है। वह मिठास शुद्धात्मा को नहीं लगती। वह अहंकार को लगती है इसलिए उसी को तोड़ते रहना पड़ेगा। दोनों को अलग ही देखना पड़ेगा तभी हल आएगा।

अनादि के अध्यास से घुस जाते हैं

प्रश्नकर्ता : मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार का अवलंबन लेकर चलते हैं फिर भी कोई फायदा नहीं होता, उसके बावजूद भी बार-बार ले लेते हैं।

दादाश्री : वह भी फिर आप नहीं लेते हो। यह तो आपको ऐसा लगता है और जैसा लगता है उस अनुसार आप उस तरफ झुक जाते हो, उस तरफ हस्ताक्षर हो जाते हैं, मुँहर लग जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर भी हमारी बार-बार अवलंबन लेने की वह अनादि की आदत इतनी गाढ़ है।

दादाश्री : वैसा अध्यास हो गया है न! वह अध्यास छूटेगा, तब न!

प्रश्नकर्ता : जागृति उतनी नहीं रहती।

दादाश्री : वैसा अध्यास हो गया है लेकिन उस अध्यास के पीछे, यह जो जागृति है न, वह आप हो और यह जो अध्यास है, वह अध्यास है। आप अपना काम करो, वह अध्यास, अध्यास का काम करेगा।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। हम अपना काम करेंगे और अध्यास, अध्यास का काम करेगा तो वह अध्यास वाला ही ढीला पड़ जाएगा।

दादाश्री : अपना ज्ञान ऐसा ही कहता है न!

प्रश्नकर्ता : अपना ज्ञान तो स्पष्ट रूप से ऐसा कहता है कि, 'हमें कुछ नहीं करना है,

कोई अनुमोदन नहीं करना है' लेकिन फिर भी अंदर घुस जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, घुस जाते हैं लेकिन वह भी, घुसते नहीं है वैसा भासित होता है। घुस जाना अलग चीज़ है और भासित होना, वह अलग है। हमें वैसा भासित होता है इसलिए हम उस तरफ हस्ताक्षर कर देते हैं। वैसा भासित हो फिर भी यदि हम हस्ताक्षर नहीं करें कि, 'ओहो! यह तो भासित हो रहा है! ऐसा हो ही कैसे सकता है?

छूटने के लिए है, पाँच आज्ञा का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : मन के बारे में ऐसा बहुत होता है। विचार शुरू होने से पहले पता चलता है और विचार खत्म होने के बाद पता चलता है। बाद में वे वापस दिखाई देते हैं लेकिन बीच का कुछ भी पता ही नहीं चलता।

दादाश्री : वह सब पता चलेगा। धीरे-धीरे पता चलेगा तो दिखाई देगा। थोड़ा-थोड़ा अभ्यास करते रहना। ऐसा करते-करते संपूर्ण रूप से दिखाई देने लगेंगे। यदि कहीं पर रास्ता दिखाई दे तो उसे आँखों से देखता है, वह दृश्य नहीं कहा जाएगा। दृश्य तो अंदर की आँखों से देखने हैं। इन आँखों से दिखाई ही नहीं देंगे। ये आँखें तो बाहर का ही देख सकती हैं अंदर का नहीं देख सकतीं।

प्रश्नकर्ता : अंदर का देखने के लिए क्या करना है?

दादाश्री : वही, हमने जो दृष्टि दी है न, आत्मदृष्टि। फिर धीरे-धीरे, अभ्यास करने पर देख पाओगे।

प्रश्नकर्ता : फिर जब किसी विचार को देखने बैठते हैं न, तो विचार में ब्रेक(रुकावट) आ जाता है।

दादाश्री : ब्रेक आ जाता है लेकिन यदि देखने बैठें तो विचार कम हो जाते हैं न! उसके लिए तो धीरे-धीरे उसका अभ्यास करते रहना है। अभ्यास करते-करते दिखाई देगा। यों एकदम से नहीं दिखाई देगा। यह तो बहुत कचरा भरा हुआ है न इसलिए वह तो दिखाई ही नहीं देगा न! वह तो निकलेगा, वह तो कितने ही साल बीतने के बाद ठिकाने पर आएगा।

यह संसार अभ्यास का परिणाम है। संसार का ही अभ्यास किया है, इसलिए अभ्यास हो गया। अभ्यास किस वजह से हो गया? सांसारिक अभ्यास किया, उस वजह से और इस अभ्यास से छूट जाएँगे। जब यह ज्ञान देते हैं न, तब जो पाँच आज्ञाएँ देते हैं, वे अभ्यास के लिए दी हैं।

पहले हैन्डल मारना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद पाँच आज्ञा का ध्यान तो रहता है लेकिन उनमें जितना रहना चाहिए, उतना रह नहीं पाते।

दादाश्री : वह तो रहना चाहिए न! यह जो अक्रम विज्ञान है न, वह, सब (हिसाब) साफ किए बगैर ही ले लिया है इसलिए वे पिछले जो हिसाब आते हैं, वे सफोकेशन(घुटन) करवाते हैं।

हमने तो क्या कहा है कि, 'ज्ञान लेने के बाद यदि चिंता हों तो जिम्मेदारी हमारी' लेकिन आज्ञा का पालन होना चाहिए। आज्ञा कठिन भी नहीं हैं। आप प्रैक्टिस करने लगे।

प्रश्नकर्ता : आज्ञाएँ ध्यान में हैं लेकिन जिस सहज भाव से रहनी चाहिए वैसा नहीं होता, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : आपको उस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। बाकी, सहज भाव से नहीं रह

पाए इतना कठिन नहीं हैं। सब से सरल चीज़ है लेकिन आदत डालनी चाहिए। पहले उसका अभ्यास करना पड़ता है। अभी अन्-अभ्यास है! अन्-अभ्यास यानी कि हमें रियल और रिलेटिव देखने का अभ्यास ही नहीं है न! एक महीने तक आप अभ्यास करो फिर आसानी से हो जाएगा। यानी कि पहले हैन्डल घुमाना पड़ेगा। 'यह रियल और यह रिलेटिव', यदि कोई बहुत जागृति वाला हैन्डल नहीं घुमाए तो चलेगा। लेकिन इन लोगों को तो इतनी जागृति है नहीं न! बहुत अधिक जागृति वाले को तो कुछ भी नहीं करना पड़ता। हैन्डल घुमाने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। यह सब तो सहज रूप से रहता ही है!

अभी प्रैक्टिस करते रहो वर्ना यह चीज़ सरल नहीं है क्योंकि इंजन नया होता है न, वह भी रवां (अभ्यस्त) हुए बगैर नहीं चलता। अतः हमें हैन्डल धुमा-धुमाकर ठीक करना पड़ेगा!

आज्ञापालन करनी हैं, ऐसा निश्चय करो

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो अभ्यास करना है, वह अभ्यास तो रहना चाहिए न, वह अभ्यास ही ठीक से नहीं रह पाता!

दादाश्री : नहीं रहेगा। वह सफोकेशन करवाएगा, लेकिन आपको निश्चय करना है कि मुझे आज्ञापालन करना ही है। 'ये दूसरे सभी बल उल्टी दिशा में जोर लगाएँ फिर भी मुझे आज्ञापालन करनी ही है,' ऐसा निश्चय करना है। तब फिर आपकी कोई जिम्मेदारी नहीं रहेगी फिर मेरी जिम्मेदारी है। यदि आप मेरी आज्ञा का पालन करते हो तो फिर मेरी जिम्मेदारी रहेगी। आपकी जिम्मेदारी का अंत आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि किसी कारणवश आज्ञा का पालन नहीं हो पाए तो क्या करें?

दादाश्री : यदि पालन नहीं हो सका तो उसमें हर्ज नहीं! लेकिन आपकी इच्छा वैसी नहीं होनी चाहिए। 'पालन नहीं कर पाया और पालन नहीं कर सकता।' इनमें अंतर हैं। आपकी इच्छा, आज्ञापालन की ही होनी चाहिए। पालन नहीं हो पाए वह अलग मेटर (चीज़) है। उसके लिए तो हम आपको विधि कर देंगे और क्षमा करवा देंगे क्योंकि शक्ति के अनुसार करना है। शक्ति से ज्यादा उछल-कूद नहीं करना है।

रिलेटिव व रियल देखने का अभ्यास

शुरु में कुछ दिनों तक अभ्यास करना पड़ेगा। सभी में शुद्धात्मा देखने का अभ्यास करना चाहिए। रियल वस्तु तो शुद्धात्मा है और यह जो रिलेटिव है, वह पुद्गल है। खोखा ही है, उसका। उसकी पैकिंग है। पैकिंग और वस्तु दोनों का अभ्यास करना चाहिए। फिर चाहे वे पैड़-पौधे हों, बकरी हो, चीता हो या सिंह हो। अभ्यास हो जाने के बाद कुछ भी कठिन नहीं रहेगा।

बस में बैठे-बैठे रिलेटिव और रियल देखने का थोड़ा-बहुत अभ्यास नहीं किया क्या? पाँच आज्ञाओं की धीरे-धीरे प्रैक्टिस करनी पड़ेगी।

प्रश्नकर्ता : प्रैक्टिस करनी पड़ेगी?

दादाश्री : हाँ, फिर सहज भाव से रहा करेगी। सहज भाव! चलते-फिरते, गाय-भैंस सभी में आत्मा दिखाई देगा। पहले अभ्यास करना पड़ेगा। अनादि का अन्-अभ्यास है न?

प्रश्नकर्ता : यानी कि जल्दी....

दादाश्री : नहीं। आपको वह आज्ञा का अभ्यास करना पड़ेगा। अभी दूज का उजाला हुआ है। अब, धीरे-धीरे पूनम की ओर बढ़ता जाएगा। अतः आपको थोड़ा-बहुत करते रहना पड़ेगा।

पंद्रह दिनों तक, महीनों तक, थोड़ा-बहुत जब तक वह हो सके तब तक, उसके बाद तो वह अपने आप ही होता रहेगा। अतः यदि हो सके तो एक घंटा तक रिलेटिव और रियल देखने का अभ्यास करना। इस तरह से देखते, देखते, देखते एक घंटा रोज़ का निकालो तो बहुत अच्छा। हो पाएगा क्या?

प्रश्नकर्ता : अवश्य होगा।

दादाश्री : हाँ, तो बस! अगर इतना ही करोगे तो बहुत हो गया! तब तो पूरा ही हो जाएगा। फिर तो सभी को झाड़ू-झपटकर साफ कर देगा। एक घंटा रिलेटिव और रियल दोनों को देखते, देखते, देखते...!

सामान्य ज्ञान के अभ्यास से

अर्थात् यह बिल्कुल सेफसाइड वाला मार्ग है, अगर आप हमारे कहे अनुसार समझोगे तो!

हम वकील ढूँढने निकलते हैं तब उसके बाल देखते हैं या उसकी वकालत देखते हैं? हाँ, यहाँ पर अगर काले चश्मे पहनकर आए तो उस चश्मे से हमें क्या? हमें यही देखना है कि उसमें वकालत का गुण है या नहीं? उसी तरह हमें आत्मा देखने हैं।

ज्ञानी पुरुष यों जा रहे हों, तब वे ऐसा नहीं देखते हैं कि यह स्त्री है या यह पुरुष है या फिर यह मोटा है, यह पतला है अथवा लूला है या लंगड़ा है, ऐसा सब नहीं देखते हैं। तो फिर वे 'क्या देखते हैं?' सामान्य भाव से आत्मा ही देखते हैं।

विशेष भाव नहीं रखते। विशेष भाव वाला क्या करता है? 'देखो न लंगड़ा है!' उससे आगे का देखना रुक जाता है। एक ही देखा और लाभ

एक का ही मिला और सौ लोगों का लाभ गया। विशेष भाव किया। अतः हम सबकुछ सामान्य भाव से देखते हैं। विशेष परिणाम को नहीं देखते कि ये अक्लमंद हैं और ये बेअक्ल हैं और ये मूर्ख हैं और ये गधे हैं, ऐसी झंझट में हम कहाँ पड़ें।

प्रश्नकर्ता : इसीलिए आप वह अभ्यास करने को कहते हैं न कि एक घंटा हर एक को शुद्धात्मा रूप से देखने का अभ्यास करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, जितना-जितना अभ्यास करेंगे न, तो उससे फिर विशेष परिणाम खत्म हो जाएँगे। विशेष परिणाम से अभिप्राय उत्पन्न होते हैं, यह अंधा है और यह लूला है। वह तो पुद्गल की बाज़ी है।

अनादि का अभ्यास बदलना पड़ेगा

अब, शुद्धात्मा का ध्यान रखना, 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलना कुछ देर क्योंकि बहुत समय से 'मैं चंदूभाई हूँ', 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा ही गाते रहे हो न, उसके स्पंदन रह गए हैं। उसी के अन्व्यास से और इसका अभ्यास करने से अध्यास हो जाएगा। वह अध्यास तो चला गया। अब, 'मैं चंदूभाई हूँ', वह देहाध्यास चला गया।

प्रश्नकर्ता : तो अब जितनी तन्मयता है उतना कच्चापन ही है न?

दादाश्री : हाँ, वही तो! तन्मयता। और कोई कारण नहीं है। सिर्फ, जागृति मंद हो जाती है। जागृति मंद क्यों हो जाती है? पहले के अभ्यास की वजह से। अतः यदि हम इसमें ज़रा ज्यादा जागृति रखेंगे तो तुरंत सेट हो जाएगा। अलग ही हो जाएगा। मेरी तबियत तो चाहे कितनी भी खराब हो जाए, लोग पूछें कि, 'दादा, आज तो आपकी तबियत कुछ वीक (नरम) लग रही है।'।

तब भी मैं कहता हूँ, 'मुझे कुछ नहीं हुआ। क्या होना है?'

प्रश्नकर्ता : जानने से अशाता वेदनीय, शाता वेदनीय में बदल जाती है न?

दादाश्री : बदल जाएगी न, तुरंत ही। वेदनीय गुण पड़ोसी का है, अब वेदनीय गुण आपका नहीं है। आप निर्लेप हो। निर्लेप को कुछ नहीं होता। आपको खाँसी आए तो ऐसा लगना चाहिए कि 'खाँसी आई है'। 'मुझे आई', ऐसा नहीं लगना चाहिए। 'पड़ोसी को खाँसी हो रही है, वह ज्यादा हो गई है', ऐसा लगना चाहिए। अनादि से यह उल्टा अध्यास अर्थात् पुरानी आदत पड़ी हुई है। अतः हमें अनादि का अभ्यास बदलना पड़ेगा न!

जुदापना की जागृति का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : जब हम तन्मयाकार हो जाते हैं, उतने समय तक हमें शुद्धात्मा पद का भान नहीं रहता न!

दादाश्री : क्यों नहीं रहता है लेकिन? मानता है, 'मैं तन्मयाकार हो गया', इसलिए वह भान खो जाता है। अगर किसी व्यक्ति ने शराब नहीं पी हो, फिर भी यों ही कहे कि, 'मैंने तो आज शराब पी है', तो उतने समय तक चढ़ जाएगी। यानी कि शराबी जैसे लक्षण दिखाई देंगे, नहीं पी हो फिर भी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कितनी ही बार ऐसे लेपायमान हो जाते हैं न, तो पूरी तरह से ऐसा ही दिखाई देता है जैसे शराब पी हो! यही सवाल है न! तो फिर हम खुद को निर्लेप कैसे करें?

दादाश्री : आपको समझ जाना है कि यह होटल अपनी नहीं है। तब फिर अन्य कोई होटल जो अपनी है, वह मिलेगी। दादा ने कहा है, उस

होटल में (होम में) 'मैं निर्लेप हूँ, शुद्ध ही हूँ।' मुझे ऐसा कैसे हो सकता है?

दृश्य और द्रष्टा एक नहीं हो सकते। तन्मयाकार हो गए हैं तो वह दृश्य है। और दृश्य खुद नहीं समझ सकता कि, 'तन्मयाकार हो गया हूँ।' वह तो द्रष्टा ही जान सकता है। जाना किसने? तब कहते हैं, द्रष्टा ने। आप खुद द्रष्टा हो! फिर भी 'खुद' को ध्यान नहीं रहता। कैसा आश्चर्य है!

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ होता है जिससे कि हम दृश्य का भाग बन जाते हैं। हमारा द्रष्टापन उस समय कहाँ चला जाता है?

दादाश्री : नहीं। ऐसा है न, आप लेबोरेटरी में पढ़े हो, तो क्या चार ही घंटों में आप पूरा पढ़ लेते हो।

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : एक बार प्रयोग करवाया हो, तो आप फिर से करते हो, तब अंदर कितनी ही, कुछ न कुछ चीजें डाल देते हो। तो यदि उसमें इतना समय लगता है, तो यह तो, यहाँ टाइम तो लगेगा न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस समय 'मैं' द्रष्टा के रूप में साथ में बैठा हुआ होना चाहिए न, 'देखने वाला?' वह देखने वाला अंदर उलझन में पड़ जाता है!

दादाश्री : नहीं, वह तो अलग ही बैठा रहता है। एकाकार हो गया, ऐसा आपको लगता है, भासित होता है, जरा प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। प्रैक्टिस के बिना कैसे चलेगा? और यदि एकाकार हो गया तो जुदा नहीं हो सकेगा, जुदा कैसे करोगे वापस? वापस एकाकार हो ही नहीं सकता। यह तो, दोनों के स्वभाव अलग-अलग हो गए हैं न! अपने-अपने स्वभाव में आ गए!

प्रश्नकर्ता : कई बार जागृति रहती है कि, 'यह मेरा स्वरूप नहीं है', सहज रूप से रहती है। कई बार जागृति नहीं रहती और तन्मयाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, तो ऐसा कहो न! 'मेरा स्वरूप नहीं है' ऐसा कहने का अभ्यास करोगे न, तो जागृति आ जाएगी। वह अभ्यास करना चाहिए।

अभ्यास, व्यवस्थित के ज्ञान में रहने का

यह तो हमने 'ज्ञान' दिया इसलिए तन्मयाकार होता ही नहीं है। लेकिन खुद के मन में ऐसा लगता है कि 'क्या मैं एकाकार हो गया होऊँगा?' नहीं, वह तन्मयाकार नहीं हुआ है लेकिन यह तो सिर्फ शंका हो गई है। औरों को क्यों शंका नहीं होती? औरों को शंका होती है क्या? नहीं। उन लोगों को तो 'मैं अलग हूँ' ऐसा सोच में भी नहीं आया। अतः आप अलग ही हो और फिर भी 'मैं तन्मयाकार हो गया हूँ या क्या?' ऐसी शंका हुई तब भी भगवान 'लेट गो' करते हैं लेकिन 'अंत में धीरे-धीरे अभ्यास से, वैसी शंका भी नहीं होनी चाहिए, भगवान ऐसा कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई से जो दखल हो जाता है तो वह उसका अभ्यास कहा जाएगा?

दादाश्री : नही! अभ्यास नहीं। वहाँ पर ज्ञान की जागृति मंद हो जाती है। कोई आए तो, 'तू यहाँ पर क्यों आया है?' यदि ऐसा हुआ तो दखल किया और गड़बड़ हो जाती है। उस समय दखल मत करना।

प्रश्नकर्ता : तो तब हमें फिर दादा से सिर्फ यही माँगना है न 'हमें व्यवस्थित के ज्ञान में रहने की शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए?'

दादाश्री : 'शक्ति दीजिए', इस तरह शक्ति

तो माँगनी है लेकिन फिर उसका अभ्यास करते जाना। दिन भर नहीं अभ्यास हो सकता लेकिन दो घंटे तक हो सकता है। आप निश्चय करना कि, 'दो घंटे तक मुझे किसी भी तरह की गड़बड़ नहीं करनी है, व्यवस्थित के ज्ञान में ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो वह हो जाएगा।

दादाश्री : उसमें फिर यदि उसे अलग देखोगे कि प्रकृति तो व्यवस्थित के ताबे में हैं तो फिर उस अभ्यास से आत्मा की शक्ति बढ़ती जाएगी।

यह जो 'चंदूभाई' है, वह आपका उदय स्वरूप है। अतः वह जो है वह पूरा व्यवस्थित के ताबे में है, अतः वे जो भी करे उन्हें आपको 'देखते' रहना है। चंदूभाई को प्रेरणा देती है, वह भी व्यवस्थित शक्ति ही देती है और आपको देखते रहना है कि 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं!'

व्यवहार तो व्यवस्थित चलाता है, आपको सिर्फ देखते ही रहना है लेकिन आपको धीरज नहीं रहती न! धीरज रखना एकदम से तो नहीं रखा जा सकता न! क्योंकि बहुत समय से धीरज नहीं रखा जा सकता न! अतः कुछ दिन अभ्यास करना पड़ेगा।

दोष दृष्टि के सामने ज़रूरत है, नई प्रैक्टिस की

व्यवस्थित धीरे-धीरे समझ में आ जाएगा क्योंकि उसके लिए कृपा की ज़रूरत है, कृपा चाहिए। यों तो रिलेटिव में ऐसा नियम है कि लोगों के दोष दिखाई देते हैं और खुद के दोष नहीं दिखाई देते। कैसा है? जबकि यहाँ पर किसी का भी दोष नहीं देखना है, अपने ही दोष देखने हैं ऐसा नियम है। यदि इतना ही नियम में रहें, तब भी सुख नहीं जाएगा। ऐसे एक भी नियम का पालन करेंगे न, तब भी भीतर

से सुख नहीं जाएगा। दोष नहीं दिखाई दें और यदि इमोशनल होने की वजह से दिखाई दें तो प्रतिक्रमण करना। हम उसे नहीं दिखाई देने के बराबर ही स्वीकार कर लेंगे। वह सरल नहीं लगता तुझे?

प्रश्नकर्ता : बहुत कठिन है, दादा। लेकिन हमें जो सामने वाले के दोष दिखाई देते हैं, क्या इमोशनल होने की वजह से दिखाई देते हैं?

दादाश्री : नहीं-नहीं। वह तो पहले की आदत रह गई है। उसी देह में ज्ञान मिला है न, अतः पहले की जो प्रैक्टिस है, वह प्रैक्टिस नहीं छूटती। अतः अब, आपको वह प्रैक्टिस छोड़नी होगी।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। लेकिन जब आपने ज्ञान दिया तब अहंकार तो यों लगभग जीरो ही हो गया। ऐसा दृढ़ हो गया कि 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ', तो फिर वह आदत कैसे काम कर जाती है?

दादाश्री : इसकी तो प्रैक्टिस करनी है, पुरानी प्रैक्टिस छूटती नहीं है न! इसलिए अब, आपको नई प्रैक्टिस करनी होगी। इसीलिए आज्ञा रूपी ये पाँच वाक्य दिए हैं न! यह नई प्रैक्टिस, वह पुरानी प्रैक्टिस। यह देह और मन-वचन वे पुरानी प्रैक्टिस के अनुसार ढल गए हैं, उसी अनुसार चलते रहेंगे। अब, आपको वैसा नहीं चाहिए। किसी के दोष देखने से क्या फायदा? उससे बल्कि खुद का सुख चला जाता है।

अतः यदि पाँच आज्ञा का पालन करोगे तो सहज भाव से सब चलता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : इन पाँच आज्ञा में रहना है, ऐसा जो भाव करें और आज्ञा को ठीक से समझ लें, तो उन दोनों में फल किसका जल्दी मिलेगा?

दादाश्री : यदि आज्ञा समझ लोगे न, तो उसके जैसा तो कुछ भी नहीं! समझने के बाद अपने आप ही आसानी से पालन हो सकेगा। और यदि समझे बगैर आज्ञापालन करने जाएँ तो कोई फायदा नहीं होगा। फिर भी महात्मा कुछ न कुछ करेंगे, उसके पीछे पड़े हैं न!

प्रश्नकर्ता : मुझे खेद रहा करता है कि दादा का ज्ञान मिलने के बाद समभाव से *निकाल* (निपटारा) क्यों नहीं कर पाता?

दादाश्री : तेरा ऐसा निश्चय होना चाहिए कि तुझे समभाव से *निकाल* करना है। नहीं रह पाता तो उसे हम लेट गो कर देते हैं न! इस फाइल का *निकाल* करते समय ऐसी अजागृति नहीं रहनी चाहिए कि उस निश्चय को तू भूल जाए। वहाँ पुरुषार्थ धर्म की जरूरत है। भूल नहीं जाना चाहिए।

वापस लाकर ठीक करना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : इतनी ही परेशानी है कि जब सामने वाला गाली देता है, तब वहाँ समभाव नहीं रहता।

दादाश्री : अब वह परेशानी नहीं आएगी। अब, फिर से ऐसा मत कहना। पहले जब चंदूभाई था न, तब परेशानी होती थी। अब तो तू शुद्धात्मा बन गया। पूरा ही बदलाव आ गया है तुझमें। इसलिए अब परेशानी नहीं आएगी। सामने वाला भी व्यवहार से, बाई रिलेटिव व्यू पोइन्ट से उस नाम से है और रियल व्यू पोइन्ट से शुद्धात्मा है। यदि वह शुद्धात्मा है, तो वह जो गाली देता है वह तो रिलेटिव देता है और फिर वह आपको गाली नहीं देता, इस रिलेटिव को देता है। अतः *पुद्गल* की कुशती कर्म के अधीन होती है उसे

देखते रहो। दो *पुद्गल* कुशती करें तो, उन्हें आप देखते रहो। कौन जीता, कौन हारा और किसने चाटा मारा, वह देखते रहो। नहीं देखा जा सकता? बाहर कभी कुशती देखने नहीं गया? तो अब यह देखना। यह *पुद्गल* की कुशती है, उसके *पुद्गल* से तेरा *पुद्गल* लड़ता है तो वह कर्म के उदय के अधीन है। इसमें किसी का गुनाह है क्या? वह शुद्ध ही दिखाई देना चाहिए। आपको ऐसा कुछ दिखाई देता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : वही परेशानी आती है न अभी, वहाँ समभाव नहीं रहता।

दादाश्री : क्यों नहीं रहता? किसे नहीं रहता? चंदूभाई को नहीं रहता, उससे आपको क्या लेना-देना? बेकार में चंदूभाई के लिए इतना आग्रह कर रहे हो।

प्रश्नकर्ता : वह अलग ही नहीं होता है न?

दादाश्री : हो ही गया है अलग। उसे तुझे वर्तन में सेट करना पड़ेगा। उधर चला जाए तो आपको वापस धकेलकर ठीक करना पड़ेगा। अलग हो गया है तो दो दिन हैन्डल नहीं घुमाना पड़ेगा?

‘मैं चंदूभाई हूँ’, ऐसा रहा तो विषमता हुए बगैर रहेगी ही नहीं और ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ रहा तो फिर समभाव से *निकाल* हो जाएगा।

अभ्यास से रहेगा तप में आनंद

चंदूभाई का किसी ने उनके ऑफिस में आकर अपमान किया कि ‘आपको व्यापार करना नहीं आता और आपने हमें परेशान कर रखा है।’ इस तरह से चाहे कुछ भी, कैसे भी शब्द बोल दे तो तुरंत आपकी दृष्टि ज्ञान पर आ जाती है तब फिर यह अपना ज्ञान क्या कहता है?

‘इस फाइल का समभाव से निकाल करो’ ऐसा होता है न? लेकिन उसने जो कहा, उसे इस शरीर में मन वगैरह वे सब तुरंत पकड़ लेते हैं, अंतःकरण पकड़ लेता है तुरंत। उसका हिंसक जवाब देने के लिए अंदर सब लाल-लाल हो जाएगा लेकिन उस समय यह जवाब न दे और तप ही करे कि मुझे समभाव से निकाल करना है। यानी कि अंदर जो लाल-लाल हो गया है, उसे देखे, तब उस समय वह क्लियर(शुद्ध) आत्मा हो जाएगा। जो तप को देखता है, वह क्लियर आत्मा है। उस लाल-लाल को देखने के बाद उसे टंडक हो जाती है। जब भी कोई संयोग हो, चाहे वह लाल करे वैसा हो या टंडक वाला हो, वह वियोगी स्वभाव वाला होता है। वह उफ़ान थोड़ी देर के बाद शांत हो जाता है। लेकिन एक बार तो बहुत ही तपता है। फिर जब उसे इस अभ्यास से देखते हैं तब आनंद हो जाता है लेकिन तप तो जाता ही नहीं। वह तप तो रहता ही है।

आत्मा के गुण बोलने का अभ्यास

खुद के (आत्मा के) सभी गुण बोलने चाहिए। वे स्वाभाविक गुण हैं। ‘मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ’ ऐसा पच्चीस-पचास बार बोलना चाहिए। रोज़ उन सभी गुणों को बोलने का अभ्यास करना चाहिए।

यह सिद्धस्तुति होगी तो अनंत सुख होगा। इसमें क्या कुछ कठिन है? रात तो अपने बाप की ही है न! क्या औरों का भाग है उसमें?

प्रश्नकर्ता : अपने बाप की ही!

दादाश्री : किसी का भी भाग नहीं है? बाप का होगा न भाग?

प्रश्नकर्ता : ज़रा सा भी नहीं।

दादाश्री : तू कहता है न, अपने बाप की है? किसी का भी भाग नहीं है। ऐसे... आराम से एक घंटा तक गाना। तुझे कैसा लगता है? बहुत कठिन है नहीं? इसमें कुछ कठिन है?

प्रश्नकर्ता : कठिन तो नहीं है, दादा।

दादाश्री : सिर्फ इतना ही है कि उसकी आदत नहीं बनाई है। प्रैक्टिस करने से सबकुछ ठीक हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : गुण बोलते समय क्या आत्मा के गुण अपने समक्ष होते हैं? उन गुणों को समझकर बोलना पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं। सिर्फ बोलना ही है। उसके लिए गुणों को समझने की ज़रूरत ही नहीं। गुण अलग ही चीज़ हैं। उन्हें बोलते समय, वह उपयोग कहलाता है। खुद के शुद्ध उपयोग में आते हैं और सिद्धस्तुति होती है इसलिए यह सिर्फ बोलना ही है, बस! वह भी इस तरह कि अपने कान को सुनाई दे। आठ मिनट से ज्यादा यह प्रयोग करके देखना। अनुकूल आए तो करना। सभी को अनुकूल आया ही। ऐसा अभ्यास नहीं किया है। नहीं?

प्रश्नकर्ता : इतनी सूझ कहाँ है, दादा? इतना सूझता नहीं है न!

दादाश्री : पुराने महात्मा हैं न, वे सभी यह कर चुके हैं। यह तो, जो नए महात्मा आते हैं, वे रह जाते हैं। कोई कहेगा ‘भाई, पूरे दिन क्या पुस्तक पढ़ना?’ तो दिन भर खुद के गुणों का ही वर्णन करते रहना है।

अभ्यास होने पर शुद्ध हो जाएगा

प्रश्नकर्ता : जिस समय गजसुकुमार ने सिर पर पगड़ी बंधवाई, उस समय उनकी स्थिति कैसी

थी? वेदना का असर नहीं हुआ उसका कारण क्या यह था कि उनका लक्ष (जागृति) आत्मा में चला गया था? इसलिए उन्हें खबर नहीं रही कि बाहर के भाग में क्या हो रहा है?

दादाश्री : वेदना का असर हुआ था। जब रहा नहीं गया, तब भगवान के शब्द याद आए कि, 'अब चलो अपने देश में।' असर हुए बगैर आत्मा 'होम डिपार्टमेन्ट' (आत्म विभाग) में घुस जाए, ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उस समय लक्ष 'एट ए टाइम' दो जगह पर रहता है, वेदना में और आत्मा में?

दादाश्री : शुरुआत में धुंधला रहता है। फिर वेदना में लक्ष छोड़ देता है और सिर्फ आत्मा में ही घुस जाता है। जिसे आत्मज्ञान नहीं मिला हो, उसे ऐसी अशांता वेदनीय अधोगति में ले जाती है, और ज्ञानी को वह मोक्ष में ले जाती है!

भगवान ने उन्हें समझाया था कि "बड़ा उपसर्ग आ पड़े, तब 'शुद्धात्मा-शुद्धात्मा' मत करना। शुद्धात्मा तो स्थूल स्वरूप है, शब्द रूप है, तब तो सूक्ष्म स्वरूप में चले जाना।" उन्होंने पूछा, 'सूक्ष्म स्वरूप क्या है?' तब भगवान ने समझाया था कि, 'सिर्फ केवलज्ञान ही है, अन्य कोई वस्तु नहीं है।' तब गजसुकुमार ने पूछा, 'मुझे केवलज्ञान का अर्थ समझाइए।' तब भगवान ने समझाया, 'केवलज्ञान आकाश जैसा सूक्ष्म है', जबकि अग्नि स्थूल है। स्थूल, सूक्ष्म को कभी भी जला नहीं सकेगी। मारो, काटो, जलाओ तब भी खुद के केवलज्ञान स्वरूप पर कुछ भी असर हो सके, ऐसा नहीं है और जब गजसुकुमार के सिर पर अंगारे धधक रहे थे, तब 'मैं केवलज्ञान स्वरूप हूँ' ऐसा बोले, तब खोपड़ी फट गई लेकिन उन पर कुछ भी असर नहीं हुआ!

केवलज्ञान स्वरूप कैसा दिखता है? पूरी देह में खुद का, आकाश जितना भाग ही दिखाई देता है। सिर्फ आकाश ही दिखाई देता है, अन्य कुछ नहीं दिखाई देता, उसमें कोई मूर्त चीज नहीं होती। इस प्रकार धीरे-धीरे अभ्यास करते जाना है। अनादिकाल के अन्-अभ्यास का 'ज्ञानी पुरुष' के कहने से अभ्यास होता जाता है, अभ्यास हुआ अर्थात् शुद्ध हो गया!

प्रश्नकर्ता : 'मैं केवलज्ञान स्वरूप हूँ' ऐसा अधिक बोले तो हर्ज है?

दादाश्री : कोई हर्ज नहीं है लेकिन सिर्फ शब्द के रूप में बोलने का अर्थ नहीं है, समझकर बोलना बेहतर है। जब तक अशुद्ध बाबत आए और उस समय अंदर परिणाम ऊँचे-नीचे हो जाएँ, तब तक 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलना अच्छा है। फिर आगे की श्रेणी में 'मैं केवलज्ञान स्वरूप हूँ' ऐसा बोल सकते हैं। गुणों की भजना करें, तो स्थिरता रहेगी! 'यह मेरा स्वरूप है और यह नहीं है, यह जो हो रहा है, वह मेरा स्वरूप नहीं है।' ऐसा बोलो तो भी ऊँचे-नीचे परिणाम बंद हो जाएँगे। असर नहीं करेगा।

सत्संग से बढ़े अभ्यास

प्रश्नकर्ता : यदि तन्मयाकार हो जाते हैं तो उसे जागृति का अभाव समझें या क्या समझें?

दादाश्री : जागृति का अभाव नहीं। जागृति तो वहाँ पर है ही। आपके कर्म का उदय बल जबरदस्त है, फोर्स है। जब तक आधे इंच के पाइप में से पानी आ रहा हो तब तक उँगली टिकती है और अगर बहुत फोर्स से डेढ़ इंच के पाइप में से पानी आए तो उँगली खिसक जाती है। ऐसा फोर्स है कर्मों का। बाद में फिर जब फोर्स कुछ कम हो जाएगा, तो फिर से उँगली

टिकेगी। जागृति तो निरंतर है ही। लेकिन जितना इस तरह से हुआ, उन फाइलों का आपको फिर से *निकाल* करना पड़ेगा। जागृति की उपस्थित रखे बिना जो फाइलें गई, उन फाइलों का फिर से जागृतिपूर्वक *निकाल* करना पड़ेगा। यानी कि सेकन्ड टाइम आएँगी। इसी जन्म में आती रहेंगी। जागृति तो निरंतर रहेगी।

प्रश्नकर्ता : यह तुरंत लक्ष में आ जाता है लेकिन ऐसे प्रत्येक मिनट लक्ष नहीं रहता।

दादाश्री : वह तो, चंदूभाई तन्मयाकार हो जाते हैं, आप नहीं होते। यह ज्ञान ही ऐसा है न, तन्मय होता ही नहीं है न! चंदूभाई तन्मय हो जाएँ तो 'आपको' वह देखते रहना है और इस अभ्यास की ज़रूरत है। उसे सत्संग की ज़रूरत है। जैसे-जैसे आप हमारे पास आकर बैठोगे, जैसे-जैसे शक्ति बढ़ती जाएगी।

अलग रहकर हो पाएगा खुद का निरीक्षण

प्रश्नकर्ता : यह देखना, तो वह किस तरह से?

दादाश्री : यह क्या कर रहा है क्या ऐसा नहीं दिखाई देगा भला? ये चंदूभाई पूरे दिन क्या करते हैं, वह मुझे दिखाई देता है। वैसा ही 'आपको' भी दिखना चाहिए। बस, इतना ही। वैसा ही, फिर नई डिजाइन का नहीं। कोई नई डिजाइन या कुछ भी नहीं कि उसमें अंदर आर्किटेक्चर को लाने की ज़रूरत नहीं है। जैसा मुझे दिखाई देता है वैसा ही आपको दिखना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने एक बार बात भी की थी कि चंदूभाई खाना खा रहे हों तो जैसा दर्पण में जैसा दिखाई देता है, उसी तरह से दिखाई देना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, यानी कि वैसा ही दिखाई देना चाहिए। वह दर्पण को दिखे या मुझे दिखे, सब एक समान ही है न! वैसा ही दिखाई देना चाहिए। क्या वह मुश्किल है?

प्रश्नकर्ता : दादा, वह आपके लिए आसान है लेकिन हमारे लिए तो मुश्किल ही है न?

दादाश्री : नहीं। लेकिन वह धीरे-धीरे फिट कर लेना है, फिर अपने आप ही फिट हो जाएगा। उस तरफ दृष्टि नहीं जाएगी तो फिर वह फिट कैसे होगा? महावीर भगवान तो एक ही कार्य करते थे कि महावीर क्या कर रहे हैं उसे देखते रहते थे, बस। बाकी किसी झंझट में थे ही नहीं। महावीर जब जाग रहे होते थे तब उन्हें जागृत अवस्था में देखते थे, मैं देख रहा हूँ उस तरह से। जैसे मैं देख रहा होऊँ न, उस तरह से 'आपको' देखना है। कोई जागृत और समझदार व्यक्ति देखता ही रहता है, अपना पूरा निरीक्षण करता रहता है। उस प्रकार से 'आपको' निरीक्षण करना है, इतना ही है न! औरों का करने की शक्ति तो सभी लोगों में है लेकिन यह तो खुद का निरीक्षण करने की शक्ति! क्योंकि अनादि से इस चीज़ का अभ्यास नहीं है न इसलिए वहाँ पर कमज़ोर पड़ जाता है।

दर्पण में देखकर आसान कर दिया है। ऐसा करते-करते प्रैक्टिस हो जाएगी क्योंकि अनादि काल से इस तरह से देखा ही नहीं है न! क्योंकि 'यह मैं खुद ही हूँ' तो फिर देखने को रहा ही कहाँ! यह तो खुद जुदा हो चुका है इसलिए देख सकता है। देखने वाला जुदा हो गया!

अतः अंतिम ज्ञाता-द्रष्टा तो, चंदूभाई आ-जा रहे हों तो आपको ऐसा दिखाई देना चाहिए कि 'ओहोहो, आइए चंदूभाई, आइए चंदूभाई।' चंदूभाई

बात कर रहे हों तब भी आपको जुदा दिखाई देना चाहिए। अतः अब सिर्फ, इतना ही करना है। पूरे दिन यही अभ्यास कर कि, 'तू देखता रह कि चंदू का शरीर क्या-क्या कर रहा है, वाणी क्या-क्या बोल रही है, उसे सब देखता रह और मन क्या-क्या झाँवादाँवा कर रहा है, उसे देखता रहे।' इतना ही देखते रहना है। हो पाएगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : तू शुद्धात्मा है। तुझे देखना और जानना है। ज्ञाता-द्रष्टा और परमानंदी। तो स्वभाव क्या है शुद्धात्मा का? ज्ञायक स्वभाव। करना, वह पुद्गल का धर्म है और जानना व देखना, वह आत्मा का धर्म है। 'अपने-अपने धर्म में रहो', ऐसा कहते हैं। जड़ और चेतन दोनों द्रव्य स्वभाव से भिन्न हैं जिन्हें ऐसा सुप्रतिष्ठित रूप से समझ में आता है कि जो यह करता है, वह चंदू है, वह पुद्गल है। मन झाँवादाँवा करता है, वह, यह पुद्गल है, वाणी निकलती है, वह पुद्गल है। वह पुद्गल है, उसका धर्म अलग है। आत्मा का धर्म अलग है। दोनों का लेना-देना नहीं है। आत्मा का मुख्य स्वभाव क्या है? ज्ञाता-द्रष्टा व परमानंद!

खुद की फिल्म देखने का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : देखने और जानने में बहुत संघर्ष चलता है। अतः जो-जो संयोग मिलते हैं, उनमें बह जाते हैं।

दादाश्री : तो जो बह जाता है वह कौन बह जाता है? आप तो शुद्धात्मा हो। शुद्धात्मा कैसे बह सकता है? चंदूभाई नामक पुद्गल बह जाता है।

प्रश्नकर्ता : देखने व जानने में स्थिरता रहनी चाहिए न?

दादाश्री : नहीं। स्थिरता नहीं रहेगी। स्थिरता रहेगी तो बल्कि मुश्किल आ पड़ेगी। यदि सिनेमा की फिल्म स्थिर हो जाए तो फिर क्या 'देखोगे' उसमें? वह तो चलती ही रहनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : नहीं। वह तो चलती रहेगी लेकिन यही कि हम उसके साथ न चलने लगें और हम स्थिर रहें।

दादाश्री : नहीं। हमें 'देखते' रहना है। 'देखने वाला' तो हमेशा स्थिर ही है। 'देखने वाला' कभी भी नहीं खिंचता। आप 'देखते' नहीं हो, इसलिए उससे उल्टा अभ्यास हो जाता है। ज्ञायक भाव में रहे तो कभी भी बह नहीं जाओगे और भावनाओं के वश में हुआ कि बह गया। भावनाओं के वश में आने से तो लोग सिनेमा में भी बह जाते हैं। रोते हैं! अरे! लेकिन सिर्फ देखना ही था वहाँ पर तू रोता क्यों है? जहाँ सिर्फ देखना ही है, वहाँ रोता है, रोता है न? और फिल्म यदि एक ही प्रकार की होगी तो देखना अच्छा लगेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : अच्छा नहीं लगेगा, दादा।

दादाश्री : हाँ। फिल्म में कभी शादी होती है। कभी मारपीट होती है, कभी अपहरण होता है, तभी देखना अच्छा लगता है न! यदि पूरी फिल्म में लगातार शादी ही चलती रहे तो अच्छा नहीं लगेगा न? अतः ये पूरी फिल्म देखनी है। जिसमें ज़रा सा भी आनंद कम नहीं हो, वही अपना विज्ञान।

शक्ति तो पूर्ण है ही अंदर लेकिन अव्यक्त रूप से रही हुई है। अधूरी क्यों रहती है? क्योंकि हमें अभी भी यह सब अच्छा लगता है। फिर भी इस ज्ञान के बाद तो बहुत कुछ कम हो गया है न? जैसे-जैसे कम होता जाएगा, वैसे-वैसे

शक्तियाँ व्यक्त होती जाएँगी। कोई चीज़ 'पसंद है' तो इसका मतलब ऐसा नहीं कि उसका तिरस्कार करना है। लेकिन उसमें खुद तन्मयाकार हो जाता है, खुद भूल जाता है, खुद की शक्तियाँ भूल जाता है और इसमें तन्मयाकार हो जाता है, तो उसका मतलब यह कि वह 'पसंद है'। खाना-पीना लेकिन तन्मयाकार मत हो जाना। देखो, सिनेमा देखने जाते हो और अगर कोई अच्छी स्त्री या पुरुष हो, तो क्या उससे गले मिलते हो? और जब कोई किसी को मार रहा हो तब क्या उस पर चिल्लाते हो कि, 'क्यों मार रहा है?' 'मत मार' कोई ऐसा कुछ कहता है क्या? मन में समझते हैं कि देखना ही है, बोलना नहीं है।

कितने साल पहले सिनेमा देखने गए थे? तब भी देखा तो था न लेकिन? तब ऐसा कुछ नहीं कहते थे न कि 'क्यों मार रहा है?' हाँ, वहाँ पर देखना ही है सिर्फ! वह फिल्म आपसे ऐसा नहीं कहती कि 'आप हमें सिर पर लेकर जाओ।' फिल्म तो कहती है कि 'देखकर चले जाओ।' लेकिन अगर आप उल्टा करो तो उसमें बेचारी फिल्म क्या करे? लेकिन खुद गोंद चुपड़कर जाए, फिर क्या हो सकता है? उस गोंद को धोकर जाना पड़ेगा। खुद गोंद चुपड़कर जाता है इसलिए फिर जो कुछ भी होता है वह चिपक जाता!

प्योर देखो और जानो

प्रश्नकर्ता : 'जानना' और 'देखना', वह किस प्रकार से होता है?

दादाश्री : तुझे पूरे चंदूभाई दिखाई दें। 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं' वह सभी कुछ दिखाई देगा। चंदूभाई चाय पी रहे हों तो दिखेगा, दूध पी रहे हों तो दिखेगा, रो रहे हों तो दिखेगा। गुस्सा हो रहे हों तो वह भी दिखेगा, चिढ़ रहे हों तो

वह भी दिखेगा, नहीं दिखेगा? आत्मा सभी कुछ देख सकता है। यह तो 'जानना' और 'देखना', दोनों साथ में नहीं होता है इसलिए तुझे परमानंद उत्पन्न नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : 'जानना' और 'देखना', वे दोनों किस तरह हो सकता है?

दादाश्री : उसका हम अभ्यास करें, तो होगा। हर एक चीज़ में उपयोग रखें, जल्दबाजी या धांधली नहीं करें, शायद कभी गाड़ी में चढ़ते समय भीड़ हो तो भूलचूक हो जाए और 'देखना' रह जाए, तो उसे 'लेट गो' कर लेंगे लेकिन बाकी सब जगह तो रह सकता है न?

ऐसा है न, 'देखना व जानना' किसे कहते हैं? 'इस जगत् को देखें व जानें' उसे? तब कहे, नहीं, उतना तो सभी देखते और जानते हैं। लेकिन जो जगत् सभी देखते हैं और जानते हैं, हमें भी वही जगत् देखना है और दूसरा हमें विशेष जगत् को जानना है कि लोग खुद मन के पर्याय नहीं देख सकते जबकि (ज्ञान वाला) अपने मन के पर्यायों को, बुद्धि के पर्यायों को देख सकता है। लेकिन यह देखना व जानना, वह कहीं सिर्फ लोगों के लिए नहीं है, आपके लिए भी वह देखना व जानना है। लोगों का देखना व जानना राग-द्वेष सहित है और आपका देखना और जानना राग-द्वेष रहित है, बस।

सिनेमा में कोई किसी को मार दे, तो आपको वहाँ मारने वाले पर द्वेष नहीं होना चाहिए। जबकि उन्हें (अज्ञानदशा वाले को) तो परेशानी हो जाती है। अच्छा लगे या न भी लगे, उसे दोनों रहते हैं। राग-द्वेष दोनों ही रहते हैं। कुछ लोगों को अच्छा भी लगे और कुछ लोगों को अच्छा न भी लगे लेकिन आपको रूचि-अरूचि

नहीं रहती। आपको ज्ञाता-द्रष्टा ही रहना चाहिए, जहाँ जाओ वहाँ। अर्थात् प्योर 'देखना' है और 'प्योर' 'जानना' है। और इस जानने की क्रिया में, दादा ने जो आत्मा दिया है वह चला नहीं जाता। आप सभी में, हर एक में आत्मा हाज़िर ही रहता है आपका। यदि यह सब नहीं होगा तो आप देखोगे क्या? थियेटर में बैठने के बाद अगर 'दी एन्ड' लिखा हुआ हो तो उसमें क्या देखोगे? आप परेशान हो जाओगे। यदि देखने की चीज़ें नहीं हैं तो 'देखने वाला' कहाँ होगा? 'देखने वाला' एब्सेन्ट! जब देखने की चीज़ें होंगी, तभी 'देखने वाला' हाज़िर रहेगा। अतः यदि ये सारी फिल्म होंगी तभी आत्मा हाज़िर रहेगा। यदि 'देखने' के लिए फिल्म ही 'नहीं' होगी तो वह एब्सेन्ट हो जाएगा। लेकिन उसका अभ्यास नहीं है, आपको उसका अभ्यास करना चाहिए। फिर जो भी काम करना हो वह करो न! सबकुछ 'देखो' कि चंदूभाई यह क्या कर रहे हैं! उस चंदूभाई को 'देखते रहो' यानी कि फाइल नंबर वन को।

एक पुद्गल को ही देखने का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : भगवान महावीर अपने एक पुद्गल को ही देखते थे, उसमें क्या कहना चाहते हैं, दादा?

दादाश्री : भगवान महावीर तो बस, सिर्फ अपने ही पुद्गल को देखते रहते थे। उन्हें तो निरंतर ही दिखाई देता था। सिर्फ, एक पुद्गल में ही दृष्टि रखते थे, और कुछ नहीं।

अर्थात् भगवान महावीर यही देखते थे कि पुद्गल क्या कर रहा है, यही देखते थे कि बुद्धि क्या कर रही है, मन और चित्त क्या कर रहे हैं, एक ही पुद्गल और कुछ भी नहीं। दूसरी झंझट

में पड़ते ही नहीं थे। आपको भी वही प्रयत्न करना है लेकिन कुछ देर रहता है और फिर चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ। प्रयत्न करने पर कुछ देर रहता है लेकिन फिर चला जाता है।

दादाश्री : क्योंकि बाहर का अभ्यास ज्यादा है न! वह तो, बिल्कुल जुदापन का अभ्यास, पुद्गल की कोई भी ऐसी चीज़ हो तो उसका निरीक्षण करते रहते थे कि 'वह क्या कर रहा है,' वह सब ध्यान में रहता था न, ऐसा था वह।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सिर्फ खुद के एक ही पुद्गल का, बाहर कोई दखल नहीं।

दादाश्री : दूसरा क्या? यदि एक पुद्गल को भी देख पाए तो बहुत हो गया। वर्ना, बाहर तो दखल होगा ही, ऐसा कहना चाहते हैं। हम भी वही कहते हैं कि आप देखने का अभ्यास करो लेकिन हो नहीं पाता। कुछ देर रहता है, फिर वापस भूल जाता है। न जाने कब तक बाहर का देखता रहता है!

प्रश्नकर्ता : वह स्टेज आएगी तो सही न?

दादाश्री : प्रयत्न तो उसी का रहता है लेकिन हो नहीं पाता न! रह नहीं पाता न! जाता है और आता है, जाता है और आता है। वह जान लेना है कि एक ही पुद्गल को देखना है।

जो एक पुद्गल का स्वभाव है वही सभी पुद्गल का स्वभाव है। स्वभाव सब का एक ही प्रकार का है। अतः भगवान का तरीका मैंने आपको बता दिया। अब उसी तरह से चलो। चंदूभाई के मन-बुद्धि-चित्त क्या कर रहे हैं, चंदूभाई क्या-क्या कर रहे हैं, उन सब का निरंतर ऑब्ज़र्वेशन करते रहना, वही कम्प्लीट शुद्धात्मा।

सामायिक में देखने और जानने का अभ्यास

अभ्यास के लिए ज़्यादा देर तक तक सामायिक करना। रविवार के दिन सामायिक करना। सामायिक में, भीतर आत्मा को अलग करते रहना, अन्य सभी को देखते ही रहना। सभी विचारों को भी देखते ही रहना। लेकिन उन्हें देखने और जानने का, दोनों ही अभ्यास आत्मा करता रहे। अन्य किसी अभ्यास में न उतरे। क्या हुआ उसे देखते रहे। मन किस धर्म में है, बुद्धि किस धर्म में है, उन सभी को देखाता रहे।

प्रश्नकर्ता : सभी की ओर देखते रहना है, वे क्या-क्या कर रहे हैं ?

दादाश्री : 'सुपरविज़न' ही करना है, किसी को धौल-वौल मत मारना। इसी तरह देखते ही रहना है मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार को।

प्रश्नकर्ता : बीच में कोई हमें धौल लगा दे, तो वह भी 'देखना' है ?

दादाश्री : वह भी 'देखना' है। और तभी, अभ्यास करते-करते ही हो जाएगा न! अंत में तो उसी अभ्यास पर आना पड़ेगा न? आज नहीं तो अगले जन्म में भी रोज़ ऐसा अभ्यास तो करना पड़ेगा न? अभी से ही थोड़ा-बहुत कर रखा हो तो उसमें क्या गलत है? अभ्यास भी कर रखा हो तो अच्छा है न? थोड़ा-बहुत जितना हो सके उतना। वहाँ चंदूभाई क्या कर रहे हैं, उन्हें 'देखते' रहना है। हम भी 'ये पटेल' क्या कर रहे हैं, उन्हें 'देखते' रहते हैं। क्या खा रहे हैं, क्या पी रहे हैं, किस चीज़ का शौक है, वह सब 'देखते' रहते हैं। यदि शौक हो तो मुझे डाँटकर बंद नहीं करवाना है, जो हो वह भले हो।

सामायिक और प्रतिक्रमण रखें शुद्ध उपयोग में

प्रश्नकर्ता : इस सरप्लस टाइम में एक सामायिक इस तरह से करनी है कि चंदूभाई सुबह से क्या-क्या कर रहे थे? वह सब देखना है, तो फिर इस तरह से हम यह जो देखेंगे, वह किसमें आएगा? उसमें फिर वे सभी दोष भी दिखाई देंगे, उन दोषों को देखने की प्रक्रिया, प्रतिक्रमण की करने क्रिया...

दादाश्री : हाँ। वह सब आत्मा में आएगा।

प्रश्नकर्ता : क्या वह शुद्ध उपयोग कहलाएगा ?

दादाश्री : हाँ। आत्मा पक्ष में आए तो फिर शुद्ध उपयोग। शुद्ध उपयोग और आत्मा में रहना, इनमें इतना ही अंतर है कि वह उपयोगपूर्वक है, शुद्ध उपयोग। शुद्ध उपयोग अर्थात् यह सामने वाला व्यक्ति यदि धौल मारे, तब भी आपका यह (उपयोग) नहीं जाना चाहिए कि 'वह शुद्धात्मा है।'

प्रश्नकर्ता : और आत्मा में रहना अर्थात् क्या ?

दादाश्री : अभी यह जो बात की, उसे आत्मा में रहना कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह जो आँखें बंद करके दोष देखते हैं, वह सब।

दादाश्री : वह सब, आत्मा में रहना। और उसे उपयोग कहेंगे। वह अंतिम उपयोग है। धौल मारने वाला कौन? किसे मार रहा है? मैं कौन हूँ? यह सब क्या है? वह सब ध्यान में रहे, वह शुद्ध उपयोग है। मारने वाले का दोष है, किसका दोष है? कौन मार रहा है? किसे मार रहा है? उसे भी तुझे जानना होगा।

प्रश्नकर्ता : उसे अंतिम उपयोग कहा ?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : तो जब ऐसा उपयोग रहे तो उस समय आत्मा में बरतना ही कहा जाएगा न?

दादाश्री : वह बात ही अलग है न! उसकी तो बात ही अलग है! इन भाई का रिवाज़ बहुत अच्छा है, जब भी कुछ आए तब 'मेरा नहीं है', ऐसा करके अलग!

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस समय ऐसी भी जागृति रखनी पड़ेगी न कि 'मैं कौन हूँ?'

दादाश्री : वह जागृति रहेगी ही। 'मेरा नहीं है' कहने वाला, उस समय जागृति में ही रहेगा। 'मेरा नहीं है' ऐसा कहते हो तो वह भी जागृति है। क्योंकि आपको वह जागृति दी है कि 'क्या तेरा है और क्या तेरा नहीं है।'

अभ्यास अर्थात् जागृति में तैयार रहना

प्रश्नकर्ता : दादा, एक्जेक्ट उपयोग वह स्व-परिणाम है और पर-परिणाम यानी कि पराये परिणाम को खुद के परिणाम से अलग रखना, क्या वह उपयोग कहलाएगा, एक्जेक्टली?

दादाश्री : खुद के होम डिपार्टमेन्ट के दरवाज़े पर खड़े रहकर, होम का आए तो अंदर और फॉरेन का आए तो नहीं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् वह एक्जेक्ट उपयोग कहलाएगा?

दादाश्री : वह शुरुआत का एक्जेक्ट उपयोग है, वह स्थूल उपयोग है।

प्रश्नकर्ता : वह भी स्थूल में आता है!

दादाश्री : सूक्ष्म का तो आपको पता भी नहीं चलेगा। यदि सूक्ष्म आपको समझाऊँगा तब भी समझ में नहीं आएगा। क्योंकि वह ऐसा नहीं

है कि शब्दों से पकड़ में आ जाए। अतः जब वह आपको अनुभव में आएगा तब समझ में आएगा। आपको ज़्यादा जानने की ज़रूरत भी नहीं है। यदि आप (यहाँ) स्थूल तक आ जाओ तो भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : फिर उसी का परिणाम सूक्ष्म में आएगा? स्थूल का परिणाम फिर सूक्ष्म की तरफ जाएगा?

दादाश्री : वही सूक्ष्म की तरफ जाएगा और उसी को यहाँ साफ करना है। यदि इतना साफ कर लिया तो सूक्ष्म तो अपने आप आ जाएगा। आपको करने नहीं जाना पड़ेगा। वह तो अपने आप ही आएगा। यह नहीं हुआ है इसलिए वह नहीं आता। इसका पारायण नहीं हुआ है इसीलिए नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : इस अभ्यास से उपयोग रह सकता है न?

दादाश्री : इंसान को अभ्यास तो करना चाहिए न? अभ्यास यानी कि खुद जागृति में तैयार रहना।

प्रश्नकर्ता : वह क्या बताया?

दादाश्री : जागृति यों ही चली जाती है। गलत हो रहा है लेकिन कुछ अभ्यास नहीं करता। जागृति दिखलाती रहती है न, गलत हो रहा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ।

दादाश्री : तुझे जागृति दिखलाती है, कुछ?

प्रश्नकर्ता : दिखलाती है, ऐसा सब।

दादाश्री : दिन भर ही, कितनी उच्च जागृति हो गई है! दुनिया ढूँढ रही है लेकिन जागृति नहीं रहती।

इसलिए मैंने क्या कहा है कि 'हैन्डल घुमाओ, उपयोग रखो। पिछली आदतें बाधक हैं, वर्ना निराकुल पद दिया है आपको। एक सेकन्ड के लिए भी आपको आकुलता तो नहीं होती लेकिन व्याकुलता भी न होती। जो मोक्ष का 1/8वाँ भाग है। दो आना मोक्ष वह तो मैंने आपको यहाँ बैठे-बैठे ही दे दिया है। निराकुल पद दिया है।' वर्ना, पूरा संसार आकुल-व्याकुल रहता है। बड़े-बड़े संत व आचार्य, सभी आकुलता में ही रहते हैं लेकिन जब शिष्य ज़रा कुछ उल्टा बोल दे तब वापस व्याकुल हो जाते हैं! जबकि आपको तो ऐसा पद दिया है कि निराकुलता जाए ही नहीं!

जैसे कि जीवित न हो इस तरह रहना

हमारे ज्ञान देने के बाद में होम और फॉरेन(स्व-पर) दोनों अलग हो गए, उसके बाद हम कहते हैं कि ये जितने कर्म बाकी बचे हैं उनका ज्ञाता-द्रष्टा पूर्वक निबेड़ा लाना है।

ज्ञाता-द्रष्टा का अर्थ क्या है? इसका सब से उच्च प्रकार का अर्थ यह है कि खुद अंदरूनी तौर पर क्या कर रहा है, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सभी क्या कर रहे हैं, इन सभी को हर तरह से जाने और देखे, बस। इसके अलावा और कुछ नहीं। आपको किस पद तक पहुँचना है कि चंदूभाई चलते-फिरते दिखाई दे। चंदूभाई घूम रहे हों न, उसे आप बाद में बैठकर (सामायिक में) देखो तो उस घड़ी चंदूभाई दिखाई देने चाहिए कि कैसे घूम रहे थे। आपको चंदूभाई का पूरा शरीर दिखाई देना चाहिए। बाहरी भाग दिखाई देना चाहिए, अंदरूनी देखने में देर लगेगी। जब बाहरी हिस्सा अलग दिखाई देगा तब वीतराग होने लगेगे, फिर संपूर्ण वीतराग बन सकोगे।

अब बाहरी भाग क्या है? कि बेटा जा रहा हो और उसकी जेब से पैसे गिरने लगे तो ऐसे में पहले आप क्या करते थे? चीखते-चिल्लाते थे, हिला देते थे। 'अरे! रुक जा, पैसे गिर रहे हैं, रुक जा।' अंदर सब हिल जाता था। क्योंकि (अहंकार) जीवित था। चंदूभाई के तौर पर जी रहा था, इसलिए ऐसा होता था और फिर ज्ञाता-द्रष्टा बन गए तो फिर यदि पैसे गिरने लगे या जो कुछ भी होना हो, तब आप चेतावनी दे सकते हो कि, 'भाई, तेरी जेब से पैसे गिर रहे हैं।' लेकिन फिर उससे आपको डिस्टर्ब नहीं होना है बिल्कुल भी। यदि चेतावनी नहीं दो तो भी हर्ज नहीं है। जीवित हो, ऐसा पता नहीं चलना चाहिए।

अभी तो यह दृष्टि आगे बढ़ती जाएगी। अभी यदि भीतर जीवित होता तो चीखने-चिल्लाने लगता, अब तो जो कुछ भूल होनी हो या नुकसान होना हो तो भले हो, आपको ज्ञाता-द्रष्टा रहना है। मर चुके होते तो फिर क्या करते? यदि उसके बाद भूलें होतीं तो? यह सब इस तरह से, उसके जैसा है। बेटी के हाथ से सारे ग्लासवेयर टूट जाएँ तो आप सिर्फ देखने वाले और जानने वाले। बस! एक अक्षर भी मत बोलना, जैसे जीवित ही न हो उस तरह से रहना।

अभ्यास से पहुँच पाएँगे अंतिम स्टेशन तक

अंतिम ज्ञाता-द्रष्टा तो, जब चंदूभाई आपको अलग दिखाई दें। चंदूभाई दादाजी के पैरों पर तेल मालिश कर रहे हों तब भी आपको अलग दिखाई दें और जब 'आप' कहो कि, 'चंदूभाई बहुत बढ़िया मालिश की' तो वह अंतिम (बात है)!

प्रश्नकर्ता : यों आकृति से अलग दिखाई देगा या समझ से अलग दिखाई देगा?

दादाश्री : पहले समझदारी से अलग दिखाई

देगा, फिर धीरे-धीरे आकृति से दिखाई देगा। चलते-फिरते जैसे अन्य कोई जा रहा हो, वैसा दिखाई देगा। ये भाई आते-जाते हुए दिखाई दे रहे हैं तो वह क्या समझ से दिखाई दे रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, आकृति से।

दादाश्री : ऐसा दिखाई दे तो वह ज्ञाता-द्रष्टापन है, अर्थात् आत्मा अलग है। उसके लिए ज्यादा लालच मत करना। वह तो बहुत बड़ा पद है। आपको तो यह जितना दिया है, उतना दृढ़ हो जाए तो बहुत हो गया। लिमिट रखने जाएँगे तो यह भी रह जाएगा और वह भी रह जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि इतना जुदापन होना चाहिए कि चंदूभाई अलग दिखाई दें, चलते-फिरते लेकिन उसमें द्रष्टा तो चंदूभाई के भीतर ही है न?

दादाश्री : तभी देखना है न! चंदूभाई के अंदर है फिर भी 'उसे' अलग दिखाई दे, वह तो अंतिम पद है। आपको तो मैंने जितना बताया है, उतना ही आ जाए तो बहुत हो गया। उस स्टेशन तक पहुँचे गए तो बाकी के सभी स्टेशन प्राप्त हो जाएँगे।

अभ्यास द्वारा पूरा काम कर लेना

आज्ञा पाँच ही दी हैं। ये पाँच आज्ञा निरंतर समाधि में रखें, ऐसी हैं। इनमें रहने के लिए पहले अभ्यास करना पड़ेगा। फिर अपने आप सहज हो जाएगा। यदि वह अभ्यास कर लिया हो तो फिर उसका यह भी चलता रहेगा और वह भी चलता रहेगा। चलता रहेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, सही है।

दादाश्री : इसलिए अब, इतना करना। उम्र

हो गई है। पूरी तरह से काम कर लेना। काम तो हो गया है लेकिन अभी और भी ज्यादा अच्छा। ये आज्ञा दी हैं यदि अभी से कर लिया हो तो उपयोग रहेगा वर्ना जब गलती हो जाए, तो फिर परेशानी होगी, तो मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी। ये आज्ञा दी है इसलिए उपयोग रहता है। आज्ञा का पालन करना तो मुख्य धर्म है, अन्य कोई धर्म नहीं है।

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप है। क्रमिक मार्ग में तीर्थकरों की आज्ञा का पालन करना होता था। इस अक्रम मार्ग में ज्ञानी की आज्ञा का पालन करना है। इन पाँच आज्ञाओं में सब, पूरे संसार का स्वरूप आ जाता है। ऐसा हिसाब निकाला है या नहीं? यह सारा स्वरूप उसी में आ जाता है।

ज्ञानी के कहे अनुसार करे, वहाँ 'राजीपा'

आपकी दृढ़ इच्छा है कि ज्ञानी की आज्ञा में ही रहना है, तो उनकी कृपा द्वारा आज्ञा में ही रह पाओगे। हमारी आज्ञा का जितना पालन करता है उतना उसे हमारा राजीपा (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) अवश्य मिलता है।

पाँच आज्ञा में निरंतर रहना है वह भाव, सिर्फ, इतना ही अंदर रहना चाहिए। अन्य कोई कृपा कहीं से देनी करनी नहीं है। कोई पैर दबाए उस पर कृपा ज्यादा उतरे और न दबाए उस पर कम उतरे, ऐसा कुछ है ही नहीं। वह भाव और परम विनय, इतना ही आपको समझना है और दादा ने कहा है, वैसी ही खुद की आज्ञापालन की मजबूत इच्छा। हमें पता चल जाता है कि इसकी इच्छा मजबूत है या कमजोर हैं। पता चलेगा या नहीं? जैसे कि स्कूल में टिचर हैं, उनकी क्लास में पच्चीस-तीस बच्चे हैं, उनमें से दो-चार पर ही उनकी कृपा ज्यादा होती है। जो

उनके कहे अनुसार लेशन और सबकुछ करके लाते हैं। उन पर वे राजी होते हैं न।

हथियार (शुद्धात्मा) का उपयोग करना वर्ना, जंग लग जाएगा

‘ज्ञानी पुरुष’ के कहे अनुसार अभ्यास होगा तो शुद्ध हो जाएगा! जिसे यह ज्ञान मिला है, उसे तो एक मिनट भी फुरसत नहीं रहती। मुझे एक मिनट भी फुरसत नहीं मिलती, एक सेकन्ड के लिए भी नहीं! बस के लिए खड़े हो और बस न आए तो लोग यों देखते रहते हैं। इधर देखते हैं, उधर देखते हैं और बगलें झाँकते रहते हैं। अगर आप वहाँ पर खड़े हों तो बगलें झाँकने का क्या मतलब? आपके पास ज्ञान है न! तो वहाँ जो लोग खड़े हैं, उनमें शुद्धात्मा ‘देखना चाहिए’। जो आ-जा रहे हों, उनमें शुद्धात्मा ‘देखना चाहिए’। बसें जा रही हों तो, उनमें बैठे लोगों में शुद्धात्मा ‘देखना’। ऐसे करते-करते आपकी बस आ जाएगी। अतः सभी में शुद्धात्मा देखें और आप अपने शुद्धात्मा का ध्यान करते रहें तो अपना टाइम व्यर्थ नहीं जाएगा। जबकि जगत् के लोग तो बगलें ही झाँकते रहेंगे। इधर-उधर देखेंगे और फिर अंदर अकुलाते रहेंगे। बस न आए तो अकुलाहट होती है। आप अपना उपयोग क्यों बिगाड़ते हो? और यदि शुद्धात्मा देखोगे तो कितना आनंद होगा! अतः यदि हथियार प्राप्त हुआ है तो उसका उपयोग करना चाहिए न! वर्ना, हथियार को जंग लग जाएगा।

समय का सदुपयोग करके समझ लो

यह तो अक्रम है यानी कि खुल्लम खुल्ला, सभी बातों का तुरंत स्पष्टीकरण देने वाला। जबकि ‘क्रमिक मार्ग’ में कितना ज़री-कसब वाला बुनते हैं न! उसमें एक मन रूई से बुने हुए सूत में एक तोला सोना पिरोते हैं। तो वहाँ कितना सूत होता

होगा, तब जाकर उस पर पाव सेर सोना चढ़ता है! जबकि ये तो भगवान के सूत्र हैं। कितना? एक तोला सोना। तो उसमें कितने ही सूत्र आ जाते हैं। उतने में एक तोला सोना। भगवान ने क्या कहा था? ‘हे गौतम, सूत्र में पिरो दो।’ इन सूत्रों में से जो निकाल पाए उसके बाप का सोना! अब, कितने ही सूत्रों में से निकाले, तब जाकर एक तोला सोना निकलेगा। जबकि यहाँ तो सीधा सोना ही दे दिया है। आज के जीवों को यदि एक-एक सूत्र में से निकालने को दें तो क्या दशा होगी? यहाँ तो पूरा स्पष्टीकरण मिल गया है! इसलिए तो अपने महात्माओं में ठंडक घर कर गई है कि ‘अब, बहुत ज़्यादा पढ़ने की क्या ज़रूरत है? भीतर ठंडक हो गई है न, आइस्क्रिम जैसा लगता है न, इसलिए वे कहते हैं, ‘ठीक है, चलता है, समभाव से निकाल करते हैं, होता है। यहाँ इसमें बहुत कुछ लिखा हुआ है। वे सारे स्पष्टीकरण समझ लेने योग्य हैं। टाइम का दुरुपयोग करने जैसा नहीं है। टाइम का सदुपयोग करके, इसमें गहराई में उतरकर समझने जैसा है। खरा स्वाध्याय तो इसी को कहेंगे। कैसा? स्व की प्राप्ति होने के बाद उसे स्वाध्याय कहा जाता है।

‘हम’ क्या कहते हैं? ‘विज्ञान’ जानो, तो ‘आप’ मुक्त! ‘विज्ञान’ जानोगे तो ‘आप’ खुद ही परमात्मा हो! अगर विज्ञान नहीं जानोगे तो तरह-तरह के जन्मों में भटक, भटक, भटक, भटक...

यह विज्ञान है इसे पूरा समझ लेना। क्योंकि इस बटन के बदले उस बटन को दबा दोगे तो ठंड के दिनों में पंखा चल जाएगा। यदि ज़रा-सी भूल हो गई तो फिर शोर मचाओगे कि, ‘अरे सर्दी में मर गया!’ भाई, लेकिन बटन दबाने में यह भूल हो गई! इसलिए ज़रा इसे समझ लेना। सूक्ष्मता से समझने जैसा है यह विज्ञान।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

10-11 अप्रैल : ईस्ट लंदन में पहले दिन आप्तपुत्र सत्संग के बाद ज्ञानविधि में 61 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं को पूज्यश्री के सानिध्य में इन्फोर्मल समय बिताने का मौका प्राप्त हुआ।

12-16 अप्रैल : हेरो (लंदन) में पूज्यश्री के सत्संग व ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। GNC व सीनियर महात्माओं ने पूज्यश्री का स्वागत किया। दूसरे दिन पूज्यश्री ने JJ-111 के बारे में दर्शाता हुआ प्रदर्शन और GNC प्रदर्शन 'प्योरिटी द जर्नी' देखें। तीसरे दिन पूज्यश्री द्वारा श्री सीमंधर स्वामी की 105 प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा हुई। शाम को आयोजित ज्ञानविधि में 160 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और 1200 महात्माओं की उपस्थिति रही। चौथे दिन पूज्यश्री द्वारा फॉलोअप सत्संग हुआ। दि. 16 को 300 महात्मा पूज्यश्री के साथ क्यू गार्डन में पिकनिक गए जो ट्रेन टूर द्वारा हुई थी।

18-22 अप्रैल : हर साल की तरह इस साल भी यू.के. की शिविर पोन्टीन्स में हुई। जिसका लाभ देश-विदेश से आए 900 महात्माओं ने उठाया। शिविर में पूज्यश्री द्वारा आप्तवाणी-1 का पारायण, 'उपराणुं' व 'एकावतारी ध्येय को बाधक' टॉपिक पर सत्संग हुए। MMHT, WMHT, आप्तपुत्र सत्संग, गरबा, दादा दरबार, GNC द्वारा कल्चरल प्रोग्राम, व पूज्य नीरू माँ का वीडियो भी दिखाया गया। पूज्यश्री के साथ खुले वातावरण में महात्माओं ने एक सेशन का आनंद उठाया।

3-6 मई : दादा भगवान परिवार के सत्संग सेन्टरों के कॉर्डिनेटर्स के लिए अडालज त्रिमंदिर संकुल में शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें कॉर्डिनेटर्स के अलावा सब-सेन्टर कॉर्डिनेटर्स, MMHT व WMHT कॉर्डिनेटर्स ने भी हिस्सा लिया। जिसकी टोटल संख्या 900 थी। पहले दिन आप्तपुत्र डिम्पल भाई ने शुरू से लेकर अभी तक के संस्था के डेवेलपमेन्ट, प्रोजेक्ट्स और उसके पीछे ज्ञानी के आशयों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। पूज्यश्री द्वारा 'सहारा दो जगत् कल्याण ध्येय को', 'प्रेम' व 'अभेदता' पर विशेष सत्संग हुए। केर टीम के सभ्यों के लिए 'बाहर के काम व अंदर के काम' पर विशेष सत्संग हुआ। जॉयजेन्टिक हॉल में पहली बार पूज्यश्री ने शिविरार्थियों के बीच भोजन ग्रहण किया और इन्फोर्मल बातें की। दूसरे दिन 'टीम वर्क से सेन्टर डेवेलपमेन्ट' टॉपिक पर नाटक प्रस्तुत किया गया। और आखिर में पूज्यश्री के दर्शन के कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ। शिविर के तीसरे दिन GNC के 750 कॉर्डिनेटर्स भी जुड़ गए। उनके लिए और एक दिन का कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें पूज्यश्री द्वारा 'प्रेम व अभेदता कहाँ पर टूट जाती है' टॉपिक पर सत्संग हुआ।

8-12 मई : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पाँच दिनों के लिए हिन्दी शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 2200 महात्मा व मुमुक्षुओं ने हिस्सा लिया। पहले दिन सुबह-शाम दोनों सेशन 'प्रतिक्रमण' हिन्दी पुस्तक पर पारायण व प्रश्नोत्तरी हुए। दि. 9 को 'उपराणुं' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुआ और शाम को पूज्यश्री ने महात्माओं द्वारा पूछे गए विविध प्रश्नों के उत्तर दिए। रात 8 बजे ब्लिस गार्डन में, पूज्यश्री के 67वाँ जन्मदिन मनाया गया। पूज्यश्री ने बर्थ डे कैक काटकर महात्माओं की उपस्थिति में भोजन ग्रहण किया। उसके बाद GNC के 100 बच्चों व युवाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ और पूज्यश्री के पुराने संस्मरणों को वीडियो क्लिप द्वारा दर्शाया गया। अंत में क्विज़ स्पर्धा 'दादा की बातें' का आयोजन भी हुआ। तीसरे दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' पुस्तक पर पारायण व प्रश्नोत्तरी हुए। शाम को आप्तपुत्र डिम्पल भाई ने पूज्य नीरू माँ के ज्ञान दशा के अनुभवों का वर्णन किया। रात को ब्लिस गार्डन में पहली बार हिन्दी शिविर में मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा का आयोजन हुआ। जिसमें 190 मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा विधि हुई। पूज्यश्री द्वारा प्राणप्रतिष्ठा होने के बाद महात्माओं द्वारा प्रक्षाल व पूजन व आरती हुई और अंत में प्रतिमा को सिर पर लेकर महात्माओं ने गरबा का आनंद उठाया। चौथे दिन में जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग के बाद शाम को ज्ञानविधि में 850 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अंतिम दिन में सुबह पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम का आयोजन हुआ। शाम की सेशन में युवाओं के प्रश्नों को प्राधान्य दिया गया। उसके अलावा शिविर में मंदिर में प्रक्षाल-पूजन व आरती, आप्तपुत्र व आप्तपुत्रियों द्वारा व्यक्तिगत मार्गदर्शन, डीवीडी व आप्तपुत्र सत्संग वगैरह का भी शिविरार्थियों ने लाभ उठाया।

दादावाणी

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर	समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
अजमेर	(21 जुलाई)	सुबह 11 से 3	मधुबन सामुदायिक भवन, शोपिंग सेंटर के पास, नाका मादर. 9460611890
अमरावती	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 1	दादा भगवान सत्संग केन्द्र, राजापेट, अमरावती. 9403411471
आगरा	(21 जुलाई)	सुबह 10 से 1	यूथ होस्टल, मरीना होटल के सामने, हरिपर्वत क्रासिंग के पास. 9258744087
औरंगाबाद	(17 जुलाई)	शाम 6 से 9	प्लाट नंबर-74, N3 CIDCO, हाईकोर्ट के पास, जालना रोड. 8308008897
अंजड	(16 जुलाई)	शाम 6 से 9-30	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, MG रोड, अंजड, जि.बरवानी. 9617153253
बेंगलोर	(14 जुलाई)	सुबह 10-30 से 4	महाराष्ट्र मंडल, दूसरा क्रॉस, गांधी नगर, बेंगलोर. 9590979099
बाड़मेर	(14 जुलाई)	दोपहर 3 से 6	आराधना भवन के पास, SBI बैंक रोड बाड़मेर. 9314209457
भिलाई	(16 जुलाई)	सुबह 10 से 4-30	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास. 9424416623
भोपाल	(15 जुलाई)	शाम 6 से 9	जनक विहार कॉम्प्लेक्स 3 rd फ्लोर, एयरटेल आफिस के सामने, मेडिस्केन सेंटर मालवीया नगर भोपाल 9425190511
भुवनेश्वर	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 4	समय और स्थल की जानकारी के लिए संपर्क करें 8763073111
बिलासपुर	(16 जुलाई)	सुबह 10 से 1	B-39, पारस प्रभा, गुप्ता गली, मन्तू चौक, बिलासपुर. 9425530470
चंडीगढ़	(13 जुलाई)	शाम 5 से 8	गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A. 9780732237
चेन्नई	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 4	कच्छी भवन, 141 पुरुस्वाक्लम 1 स्ट्रीट, अभिरामी थिएटर के पास, केलीस. 7200740000
दमोह	(14 जुलाई)	दोपहर 12 से 3	घर नं. 101, वैशाली नगर, दमोह. 9926985853
दिल्ली/ गुडगाँव	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 5	शाह ओडिटोरियम, गुजराती समाज के पास, सिविल लेन, काश्मिरी गेट मेट्रो स्टेशन के सामने, दिल्ली. 9810098564
धनबाद	(16 जुलाई)	शाम 5 से 8-30	यूजी ए, राधा कृष्ण एपार्टमेंट, कट्रास रोड, धनबाद. 9431191375
गाजियाबाद	(13 जुलाई)	दोपहर 3-30 से 7	227, सेक्टर-17-E, कोनार्क एन्क्लेव, मदर डेयरी के पास, वसुंधरा, गाजियाबाद. 9560748924
गुवाहाटी	(14 जुलाई)	सुबह 10-30 से 1-30	सरबेश्वर दास हॉउस, सिक्समाइल-जयानगर चारिआली रोड, foo.com रेस्टारंट, के पास. 7002847355
ग्वालियर	(16 जुलाई)	शाम 4 से 8	K.S मेमोरियल हाई स्कूल, गायत्री विहार कोलोनी, पिन्दु पार्क. 9926265406
हिसार	(21 जुलाई)	सुबह 10 से 1	श्री हनुमान मंदिर बुधला संत ऋषि नगर, बस स्टैंड के पास. 9255411280
हुबली/बेलगाम	(18 जुलाई)	सुबह 10 से 1	पाटीदार भवन, उन्काल टिम्बर यार्ड, हुबली. 9480370961
हैदराबाद	(16 जुलाई)	शाम 5-30 से 8-30	होटल नक्ष एंड बैंक्वेट्स, ओल्ड एमएलए क्वार्टर्स, हैदरगुडा, डी-मार्ट के पास, हैदराबाद 9885058771
इन्दौर	(14 जुलाई)	दोपहर 2-30 से 6-30	दादा दर्शन, 89 B राजेन्द्र नगर, टंकी होल, मेईन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, पुलिस चौकी वाली गली, इन्दौर. 8319971247
जयपुर	(14 जुलाई)	दोपहर 2 से 5-30	योग साधना आश्रम, विश्वविद्यालय मार्ग, बापू नगर, जयपुर. 8290333699
जबलपुर	(16 जुलाई)	सुबह 9 से 2	5वीं मंजिल, समदडीया मॉल, ग्रांड समदडीया होटल के ऊपर, सिविक सेंटर, जबलपुर. 9425160428

दादावाणी

सेन्टर	समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
जालंधर	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 2	C/O ईंगल प्रकाशन कोम्पलेक्स, सेन्ट्रल मिल कम्पाउन्ड, दमोरिया पुल के पास, पुरानी रेल्वे रोड. 9779233493
जलगाँव	(21 जुलाई)	दोपहर 3 से 7	व्हाइट हाउस, प्लोट नं-12, गणपति नगर, रोटरी होल के पास, जलगाँव. 9420942944
जोधपुर	(14 जुलाई)	दोपहर 12 से 3-30	इंद्र योग संस्थान, E-30, शास्त्री नगर, पोस्ट ऑफिस के पास 9828360301
कानपुर	(21 जुलाई)	दोपहर 12-30 से 5	123/172, C ब्लॉक, गोविन्द नगर, कानपुर. 9452525982
कोलकाता	(21 जुलाई)	सुबह 10 से 4-30	श्रीमद् राजचंद्र सेन्टर, दूसरी मंजिल, 19/2/A श्यामनंदा रोड, बेलटाला गर्ल्स स्कूल के पास, भवानी पोर, कोलकाता. 9830093230
कोल्हापूर	(17 जुलाई)	दोपहर 3 से 6-30	श्री राधाकृष्ण मंदिर, दूसरी गल्ली, शाहुपुरी, कोल्हापूर. 9960787776
खरगोन	(14 जुलाई)	सुबह 11 से 4	पावागिरी दिगंबर जैन मंदिर अन, खरगोन. 9425643302
मुंबई	(16 जुलाई)	शाम 4 से 8	योगी सभागृह, BAPS श्री स्वामिनारायण मंदिर के बाजू में, दादर (ई.) रेलवे स्टेशन के सामने, मुंबई. 9323528901
नागपुर	(14 जुलाई)	सुबह 8 से 11	गजानन मंदिर, निर्मल नगरी, शितला माता मंदिर के पास, उमरेड रोड. 9325412107
नांदेड	(16 जुलाई)	दोपहर 1 से 4	विजया बंसी भंडारी कुंज, प्लोट नं. 16, कबडे हॉस्पिटल रोड, महावीर सोसायटी, शिवाजी नगर, नांदेड. 8806665557
नवादा	(16 जुलाई)	दोपहर 1 से 5	दुर्गा स्थान, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड, नवादा. 7654057901
नासिक	(21 जुलाई)	शाम 4 से 7	आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी. 9420000416
पटना/ मुजफ्फरपुर	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 1	महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर के पास, पटना. 9431015601
पाली	(16 जुलाई)	शाम 4-30 से 7-30	प्रजापति समाज भवन, केसरी गार्डन, इन्दिरा कॉलोनी, पाली. 9252065202
पूणे	(14 जुलाई)	दोपहर 3-30 से 7	महावीर प्रतिष्ठान स्कूल, सेलिसबरी पार्क रोड, गुलटेकडी, पूणे. 8830627538
रायपुर	(16 जुलाई)	सुबह 8 से 11	दादा भगवान सत्संग सेंटर, अशोक विहार कॉलोनी के पास, गोंदवारा, रिंग रोड नं 2, भनपुरी, रायपुर. 9179025061
रांची	(21 जुलाई)	सुबह 10 से 1	अशोक नगर देवालय एवं चिंतल स्थल; गेट नं 1 एवं 2. 8092543226
सतारा	(14 जुलाई)	दोपहर 12 से 4	आदर्श अपार्टमेन्ट, 929 शनिवार पेठ, भावे सुपारी के पास, सतारा. 7722051313
सांगली	(14 जुलाई)	दोपहर 3 से 6	23, श्री शक्ति, एकता कॉलोनी, मार्केट कमिटी होउसींग सोसाइटी, न्यू रेल्वे स्टेशन के पास, सांगली. 7016622979
सोलापुर	(16 जुलाई)	दोपहर 12 से 6	निखिल थोबड़े नगर, बी-18, आयशानी बुन्लव, अवंतिका नगर के पास, साई सुपर मार्केट के पीछे, सोलापुर. 8421899781
उदयपुर	(16 जुलाई)	दोपहर 3-30 से 6-30	1462, छोटी नोखा, कुम्हारोका भट्टा के अन्दर, वार्ड नं 39, उदयपुर. 9414538411
उज्जैन	(14 जुलाई)	शाम 6 से 9	29 नगर निगम कोलोनी, लक्ष्मी नगर चौराहा, छाया नगर के पास, उज्जैन. 9424045817
वाराणसी	(14 जुलाई)	सुबह 10 से 1	श्वेतांबर जैन धर्मशाला, भेलूपुर के सामने, कॉफी हाउस वाराणसी. 9795228541

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पटना	दिनांक : 13-14 जुलाई	समय : सुबह 10 से 7	संपर्क : 7352723132	
स्थल :	महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर के पास, राजेन्द्र नगर, पटना, (बिहार)			
वैशाली	दिनांक : 15 जुलाई	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9934852489	
स्थल :	शारदा सदन पुस्तकालय, लालगंज, वैशाली, (बिहार)			
नवादा	दिनांक : 16 जुलाई	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 7654057901	
स्थल :	दुर्गा स्थान, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड, नवादा, (बिहार)			
गया	दिनांक : 17 जुलाई	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9835623307	
स्थल :	संजय नगर(छोटकी नवादा), लेप्रोसी अस्तपताल के सामने गली में, गया, (बिहार)			
धनबाद	दिनांक : 18 जुलाई	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9431191375	
स्थल :	जलाराम मंदिर होल, LRD कॉलोनी, शास्त्री नगर धनबाद, (झारखण्ड)			
बोकारो (चास)	दिनांक : 19 जुलाई	समय : दोपहर 3 से 6	संपर्क : 7765045788	
स्थल :	राम रुद्र हाई स्कूल, जोधाडीह मोड़, चास, बोकारो, (झारखण्ड)			
हजारीबाग	दिनांक : 20 जुलाई	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9798126101	
स्थल :	ओकनी, बड़ा शिव मंदिर के सामने, हजारीबाग सिटी, जिला-हजारीबाग, (झारखण्ड)			
राँची	दिनांक : 21 जुलाई	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 8092543226	
स्थल :	गेट नं 1 एंव 2, अशोकनगर देवालय एवं चिंतन स्थल, राँची, (झारखण्ड)			
किच्छा	दिनांक : 15 जुलाई	समय : दोपहर 3 से 6	संपर्क : 9411594699	
स्थल :	वार्ड नंबर 8, पंत कॉलोनी, सरस्वती विद्या मंदिर के नजदीक, SBI रोड, किच्छा, (उत्तराखंड)			
काशीपुर	दिनांक : 16 जुलाई	समय : दोपहर 3 से 6	संपर्क : 9457635398	
स्थल :	नवचेतना भवन, द्रोणसगर रोड, पटेल नगर, जनपद, ऊधमसिंह नगर, काशीपुर, (उत्तराखंड)			
हल्द्वानी	दिनांक : 17 जुलाई	समय : दोपहर 2-30 से 5-30	संपर्क : 9411376292	
स्थल :	श्री श्याम गार्डन, बैंकट हॉल, बिरला स्कूल रोड, देवलचौड़ रामपुर रोड, हल्द्वानी, (उत्तराखंड)			
रुड़की	दिनांक : 19 जुलाई	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9719415074	
स्थल :	महाराणा प्रताप हाई स्कूल, ढंडेरा, रुड़की, (उत्तराखंड)			
ऋषिकेश	दिनांक : 20 जुलाई	समय : दोपहर 2-30 से 6	संपर्क : 8126189628	
स्थल :	दादा भगवान परिवार सत्संग, भल्ला फार्म, श्यामपुर बाय पास, N.D.S. स्कूल के पास, ऋषिकेश, (उत्तराखंड)			
देहरादून	दिनांक : 21 जुलाई	समय : सुबह 9-30 से 6-30	संपर्क : 9012279556	
स्थल :	प्रेम भवन, ओशो आश्रम के सामने, पोस्ट ऑफिस रोड, क्लेमेन्टाउन सोसायटी एरिया, देहरादून, (उत्तराखंड)			
ताम्बरम	दि : 21 जुलाई	संपर्क : 8438114300	तिरुपुर दि : 25 जुलाई	संपर्क : 9894048485
चेन्नई	दि : 22 जुलाई	संपर्क : 9840072600	पोल्लाची दि : 25 जुलाई	संपर्क : 9677491601
तिरुचिरापल्ली	दि : 23 जुलाई	संपर्क : 9600755114	कोयंबतूर दि : 26 जुलाई	संपर्क : 8870952999
सेलम	दि : 24 जुलाई	संपर्क : 7200740000	मेडूपलयम दि : 26 जुलाई	संपर्क : 7200740000
ईरोड	दि : 24 जुलाई	संपर्क : 7200740000		

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738, अंजार : 9924346622, मोरबी : (02822)297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, जामनगर : 9924343687 अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

दादावाणी

Puja Deepakbhai's Canada-USA Satsang Schedule 2019

Contact no. for all centers in USA : 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & E-mail		
21 Jun	Fri	Montreal, Canada	Aptaputra Satsang	7-00 PM	9-00 PM	Hampton Inn & Suites, 1900 Trans Canada Hwy, Dorval, Quebec, H9P 2N4	Extn. 1025 wcmontreal@ ca.dadabhagwan.org		
21 Jun	Fri	Toronto, Canada	Mahatma Only Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation, 80 Brydon Dr., Etobicoke, ON, M9W 4N6	Extn. 1006 wctoronto@ ca.dadabhagwan.org		
22 Jun	Sat		Satsang	5-00 PM	8-00 PM				
23 Jun	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM				
23 Jun	Sun		Gnan Vidhi	4-00 PM	8-00 PM				
30 Jun	Sun	Savannah, GA	Aptaputra Satsang	5-00 PM	7-00 PM	Savannah Sanatan Temple, 2006 Fort Argyle Road, Bloomington, GA 31302	Extn. 1038 atul@comcast.net		
1 Jul	Mon	Tallahassee, FL	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Lawton Chiles High School - Auditorium, 7200 Lawton Chiles Lane, Tallahassee, FL 32312	Extn. 1037 wctallahassee@ us.dadabhagwan.org		
2 Jul	Tue		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM				
2 Jul	Tue		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM				
8 Jul	Mon	Des Moines, IA	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Johnston Middle School - Auditorium, 6501 NW 62nd Avenue, Johnston, IA 50131	Extn. 1036 wciowa@ us.dadabhagwan.org		
9 Jul	Tue		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM				
9 Jul	Tue		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM				
12 Jul	Fri	Houston, TX	Opening Ceremony & Satsang	10-00 AM	12-30 PM	Hilton Americas-Houston, 1600 Lamar Street, Houston, TX 77010	Extn. 10 gp@ us.dadabhagwan.org		
12 Jul	Fri	Houston, TX	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM				
13 Jul	Sat	Houston, TX	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM				
13 Jul	Sat	Houston, TX	Gnan Vidhi	5-00 PM	7-30 PM				
14 Jul	Sun	Houston, TX	Shobha Yatra	8-00 AM	9-30 PM				
14 Jul	Sun	Houston, TX	Pran Pratishtha	10-00 AM	12-30 PM				
14 Jul	Sun	Houston, TX	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM				
15 Jul	Mon	Houston, TX	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM				
15 Jul	Mon	Houston, TX	Aptaputra Satsang	4-30 PM	7-00 PM				
16 Jul	Tue	Houston, TX	GP Day	8-00 AM	12-30 PM				
16 Jul	Tue	Houston, TX	GP Day	4-30 PM	7-00 PM				
17 Jul	Wed	Houston, TX	GP Shibir - Closing Ceremony	10-00 AM	11-30 PM				
20 Jul	Sat	Chicago, IL	Satsang	5-00 PM	8-00 PM			Sheraton Lisle Naperville, 3000 Warrenville Road, Lisle, IL 60532	Extn. 1005 wcchicago@ us.dadabhagwan.org
21 Jul	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM				
21 Jul	Sun		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM				
22 Jul	Mon		Mahatma Only Satsang	6-00 PM	9-00 PM				
27 Jul	Sat	Los Angeles, CA	Satsang	5-00 PM	8-00 PM	Sanatan Dharma Temple, 15311 Pioneer Blvd. Los Angeles, CA 90650	Extn. 1009 wclosangeles@ us.dadabhagwan.org		
28 Jul	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM				
28 Jul	Sun		Gnan Vidhi	4-30 PM	8-30 PM				

अडालज त्रिमंदिर

- 17 अगस्त (शनि) शाम 4 से 7 - सत्संग तथा 18 अगस्त (रवि) सुबह 10 से 12 - आप्तपुत्र सत्संग
 18 अगस्त (रवि) शाम 4 से 7-30 - ज्ञानविधि
 24 अगस्त (शनि) - रात 10 से 12 - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम
 25 अगस्त (रवि) सुबह 11 बजे से पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम
 26 अगस्त से 2 सितम्बर (सोम से सोम) पर्युषण पर्व- आप्तवाणी 14 (भाग-1) पर सत्संग पारायण

उल्टे अभ्यास का बदलाव करने के लिए सीधा हैंडल घुमाना पड़ेगा

इन सभी में शुद्धात्मा देखने का अभ्यास करने से अंदर पुणिया श्रावक जैसी सामायिक होगी और पूरा दिन समाधि रहेगी ! एक घंटा यों बाहर निकले और सभी में शुद्धात्मा देखते-देखते जाएँ, तो क्या कोई आपसे लड़ेगा कि क्या देख रहे हो ? इन आँखों से रिलेटिव दिखाई देगा, अंदर की आँखों से शुद्धात्मा दिखाई देंगे । ये दिव्यचक्षु हैं । आप जहाँ देखोगे वहाँ दिखाई देगा । लेकिन, पहले उसका अभ्यास करना पड़ेगा, फिर सहज हो जाएगा । फिर यों ही सहज रूप से दिखाई देगा । पहले अभ्यास करना पड़ेगा न ! पहले का अभ्यास तो उल्टा था, अतः इसका अभ्यास करना पड़ेगा न ! थोड़े दिन हैंडल घुमाना पड़ेगा ।

- दादाश्री

